24

ज्ञानामृत मासिक

वर्ष 39, अंक 09, मार्च 2004

1. शान्तिवन (आबू रोड)- 'नये समाज के लिए नया ज्ञान' विषय पर आयोजित महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश भ्राता रंगनाथ मिश्र जी, कोलम्बिया विदेश मन्त्रालय की पूर्व सलाहकार बहन मारिया क्रिस्टिना सुस, छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य राज्यमन्त्री डॉ. भ्राता कृष्णमूर्ति बंधी, तिरूमाला तिरूपति के कार्यकारी निदेशक भ्राता अजय कल्लम, ब्र.कु. भ्राता निर्वैर जी, ब्र.कु. भ्राता रमेश शाह जी तथा अन्य। 2. शान्तिवन (आबू रोड)- 'भारत के आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान में राजपरिवारों की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सिरोही के पूर्व महाराजा भ्राता रघुवीर सिंह जी, नरसिंहगढ़ के पूर्व महाराजा तथा पूर्व केन्द्रीय मन्त्री भ्राता भानु प्रकाश सिंह जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. मृत्युन्जय भाई तथा अन्य।

1. काठमाण्डु (नेपाल)- ब्र.कु. गंगा बहनजी को प्रबल गोरखा दक्षिण बाहु से सम्मानित करते हुए श्री 5 महाराजाधिराज ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव एवं युवराजाधिराज पारस वीर विक्रम शाहदेव सरकार। **2. जबलपुर (कटंगा)**- पिताश्री जी के स्मृति दिवस के अवसर पर मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष भ्राता ईश्वरदास रोहाणी जी विचार व्यक्त करते हुए। साथ में हैं ब्र.कु. विमला बहन। **3. सूरत**- 'राष्ट्रीय पुस्तक मेला - 2004' में आयोजित ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक बुक स्टॉल का उद्घाटन करते हुए महापौर बहन स्नेहलता चौराज, केन्द्रीय ग्राम विकास मंत्री भ्राता काशीराम राणा, ब्र.कु. लता बहन, विधायिका भावना बहन तथा अन्य। **4. रांची**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए झारखण्ड उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता तपेन सेन तथा बहन सेन। साथ में हैं ब्र.कु. निर्मला बहन। **5. रायगढ़**- छ.ग. के वित्त वाणिज्य एवं नगरीय प्रशासन मंत्री भ्राता अमर अग्रवाल जी को ब्र.कु. चित्रा बहन एवं ब्र.कु. राधिका बहन ईश्वरीय सौगात देते हुए। **6. धादिङ्ग (नेपाल)**- 'करुणा और सहयोग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता ज्ञानेन्द्र बहादुर श्रेष्ठ तथा ब्र.कु. किरण बहन। **7. बेगूसराय**- भारत नव निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए पटना विधानसभा उपाध्यक्ष भ्राता भोला प्रसाद सिंह, राजयोगिनी निर्मलपुष्पा दादी तथा ब्र.कु. रानी बहन। **8. गहपुर**- आसाम के पंचायत और ग्रामोत्थान मंत्री भ्राता रिपुन बोरा जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मौसुमी बहन।

संजय की कलम से –

योग संकल्पों के अनुशासन का नाम है

योग एक प्रकार से मन, वचन और कर्म का आध्यात्मिक अनुशासन है। हम देखते हैं कि फ़ौज में शारीरिक ड्रिल (drill) करते समय हरेक फ़ौजी अपनी भुजाओं, टांगों इत्यादि पर पूर्ण नियन्त्रण का प्रदर्शन करता है; उसके कदमों और उसकी भुजाओं का दूसरे फ़ौजियों के कदमों और उनकी भुजाओं की गति के साथ एक तालमेल (Rhythm) होता है और जिस समय उसे रुकने के लिए आज्ञा दी जाये, उसी समय ही वह अनुशासन-बद्ध होकर रुक जाता है। उसे जिधर मुड़ने के लिए कहा जाय वह एक सुन्दर ढंग से उधर ही मुड़ता है। इस प्रकार योगी का अपने मन पर पूर्ण नियन्त्रण होता है और वह अपनी कर्मेन्द्रियों के संबंध में भी अनुशासन का पालन करता है जिनकी गणना यम-नियमों के अन्तर्गत होती है और वह जब चाहे अपने मन को अपने कारखाने या मकान-दुकान से हटा कर परमात्मा में एकाग्र कर सकता है और जब चाहे तब कार्य-व्यापार में भी प्रवृत्त हो सकता है।

वास्तव में आत्मा स्वयं एक अणु है, एक ज्योतिकण है। इसका कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण शासन ही योगी का अनुशासन है। योगी इन्द्रियों का गुलाम नहीं होता। उसका मन विषयों के पीछे नहीं भागता। वह मिताहारी होता है और उसका व्यवहार दिव्य मर्यादा (Divine discipline) के अनुसार होता है। एक साधारण मनुष्य तो राह जाते हुए निष्प्रयोजन ही इधर-उधर ताँक-झाँक करता जाता है और वह एक विषय को छोड़ दूसरे विषय पर अनियन्त्रित होकर बोलता रहता है। उसकी वृत्ति बिखरी रहती है और दृष्टि भटकती-सी रहती है। भोगी मुनष्य सारा दिन खाता-पीता, बोलता और पदार्थों को भोगता रहता है। गीता में इसे ही मन की चंचलता अथवा व्यभिचार कहा गया है। इसके विपरीत योगी संयमी होता है। जैसे राजा अपनी प्रजा का पालन करते हुए भी उस पर नियन्त्रण रखता है, वैसे ही राजयोगी भी अपनी कर्मेन्द्रियों को तथा अपने मन को ज्ञान रूप अंकुश के अधीन रखता है।

तनिक सोचिये कि यदि ऊँट की नकेल न हो तो सवार की क्या गति होगी, यदि कोचवान घोड़े की लगाम अपने काबू में न रखे तो रण में वह कहाँ जाकर उतरेगा? ठीक इसी प्रकार, आत्मा को चाहिए कि वह भी अपनी कर्मेन्द्रियों रूपी घोड़ों की बागें ज्ञान-निष्ठ बुद्धि के वश में रखे। परन्तु प्रश्न उठता है कि स्वयं बुद्धि की क्या स्थिति हो?

मन को काबू में कर सकने वाली बुद्धि है। बुद्धि यदि दिव्य हो और बलवती हो तो वह मन को कुपथ पर चलने से रोक कर सुपथगामी बनाये रख सकती है। परन्तु प्रश्न यह है कि बुद्धि में दिव्य बल कैसे आये, उसका विवेक सद्विवेक कैसे बने, उसे पाप-पुण्य की परख कैसे आये?

इसी के लिए ही राजयोग रूप साधन है। जब हम बुद्धि को सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा की स्मृति में स्थित करते हैं तो उसकी शुद्धि होती है और उसमें वह दिव्य शक्ति आती है जिससे मन का अनुशासन सहज हो जाता है। उसकी विधि यही है कि हम परमपिता परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके बुद्धि को उसकी सूक्ष्म स्मृति एवं अनुभूति में स्थित करें और मन को ऐसी बुद्धि ही का सहगामी बनायें।

अमृत-सूची

बात एकता की

सड़कों पर दौड़ने वाली किसी भी यान्त्रिक चीज को जब पहली बार प्रयोग में लाया जाता है तो उसके पहिए चमक रहे होते हैं परन्तु यही पहिए दिन भर कच्ची-पक्की सड़कों पर दौड़ लगाने के बाद बदरंग हो जाते हैं। कहीं मिट्टी, कहीं कंकर, कहीं तिनके और कहीं कीचड़ आदि लगने से उनका रूप कुरूप हो जाता है। मानवात्मा भी सृष्टि रंगमंच के एक कल्प (5000 वर्ष) के विभिन्न दृश्यों रूपी पटरी पर फिसलते-फिसलते जब कलियुग के अन्त में आती है तो पूरी तरह विकृत हो चुकी होती है। मैं-पन रूपी मिट्टी, क्रोध रूपी कंकर, लालच रूपी तिनके और काम विकार रूपी कीचड़ आदि लगने से वह मैली और काली हो जाती है। इसके अनेक भयानक परिणाम निकले हैं जिन्होंने मानवता को टुकड़ों-टुकड़ों में बाँट दिया है। मत भिन्नता और उनसे उपजी अकेलेपन की भावना आज खतरनाक रूप धारण करती जा रही है। लोग तथाकथित अपनों से कट रहे हैं, उनकी परछाई से भी परे रहना चाहते हैं। कितने ही लोग अपनी जान-पहचान खोकर गुमनामी का जीवन जी रहे हैं। इससे उनकी परेशानियाँ बढ़ी हैं, मन की शान्ति नष्ट हुई है, स्थिरता और आस्था पर आघात हुआ है। एक होकर न रह सकने के संकट ने मानव जीवन को आँधी की धूल में उड़ते पत्तों की तरह कीमतहीन बना दिया है। लोगों की खचाखच भीड़ से भरे समाज में भी वे स्वयं को नितान्त अकेले महसूस करते हैं। यह कुछ ऐसा ही है जैसे कि अंधकार से घिर जाने पर हाथ को हाथ नहीं सूझता। विकारों के गहन अंधकार में भी दिल को दिल नहीं सूझता और असंख्य मनुष्यों से घिरे हुए मनुष्य को दिल की दास्तान सुनाने के लिए किसी दिल का दर नहीं मिलता।

भारत के आदिकाल में समाज में एकता, प्रेम, दिलों का पारस्परिक मिलन, भाईचारा, समदृष्टि आदि भाव थे। इसे रास के एक चित्र से दर्शाया जाता है जिसमें श्री राधा और श्री कृष्ण बीच में होते हैं और गोप-गोपियाँ चारों ओर हाथों में हाथ लिए नृत्य की मुद्रा में होते हैं। इस महारास में उनके पावों-हाथों तथा सारे शरीर की गति की एकता, भावों तथा मुद्राओं की एकता, रोज़ के जीवन में उनकी व्यवहारिक पारस्परिक एकता के ही प्रतीक हैं।

वर्तमान युग में देवी-देवताएँ साकार रूप में नहीं हैं, केवल उनकी प्रेरणादायी यादगारें बची हैं। आज तो एकता दिखाने के लिए एक-दो के हाथ में हाथ लिए, गोल दायरे में खड़े छोटे-बड़े, पतले-मोटे आदि विभिन्न लोगों को दिखाया जाता है। जैसे हाथ छोड़ना बिखराव का प्रतीक है, इसी प्रकार, हाथ, हाथ में लेना एकता को दिखाता है। परन्तु विचार करने योग्य बात है कि समूह में मौजूद सभी लोगों के हाथ गन्दे और बदबूदार हों तो कोई भी एक-दूसरे के समीप जाने की हिम्मत नहीं करेगा। व्यवहारिक जीवन में भी एकता चाहे वह परिवार के सदस्यों के बीच हो, किसी संगठन की आपसी एकता हो या कई संगठनों की पारस्परिक एकता हो, प्रदेशों और देशों की एकता हो, इसी बात पर आधारित है कि **एक होने वाले सभी व्यक्तियों के मन, बुद्धि और संस्कार शुद्ध हों, विकार रहित और स्वार्थ रहित हों। वे वस्तु को, मौके को, पद को अपनी-अपनी तरफ खींचने का प्रयास न करें। खींचतान होने से एक तो पात्र व्यक्ति वंचित रह जाता है और पात्रताविहीन को वह पद या वस्तु मिल जाती है। इससे वह उसका दुरुपयोग करता है और पात्र व्यक्ति में हीन भावना पनपती है। वह संगठन से न्यारा होने में ही अपना भला समझने लगता है। इसलिए जैसे माला का धागा, हर मोती को अपना सहारा देकर यथास्थान पर टिकाए रखता है, उसी प्रकार, संगठन के पद, प्राप्तियों और सुअवसरों का सहारा, धागे की तरह, संगठन के हर व्यक्ति को मिलना चाहिए ताकि वह उसके सहारे जुड़ा रह सके, टिका रह सके, सहयोग और शुभ भाव बनाए रख सके।**

हाथ से हाथ मिलाने के लिए एक

दूसरी विशेषता यह चाहिए कि हाथ खुला हो, मुट्ठी बन्द न हो। बन्द हाथ आपस में मिल नहीं सकते, दूरियाँ बनी रहती हैं। बन्द हाथ संग्रह का, स्वार्थ का, खुद में सिमटने का, किनारा करने का और कट कर रहने का प्रतीक है। ये भावनाएँ अहंकार और आपसी भय, पक्षपात, चालाकी और कामचोरी के कारण निर्मित होती हैं। एक चद्दर पर गोलाकार बैठे लोगों को हम कुछ दें और वे अपने सामने अपनी प्राप्त चीज़ों को रखें तो सभी उनको देखेंगे। परन्तु यदि अपने पीछे की ओर रखने लगें तो वह स्थान दूसरों की नजरों से ओझल होता है और सामने की अपेक्षा विस्तृत भी। सामने रखी चीज़ें सब देखेंगे, सब अपनी दुआ-दृष्टि से उन चीज़ों को भी और एक-दूसरे को भी सींचेंगे परन्तु पीठ पीछे छिपाए गए संग्रह के कारण न आपस में नेत्र-मिलन होगा और न दुआ का प्रसारण। जीवन के लिए चीज़ें आवश्यक हैं परन्तु चीज़ों का संग्रह नहीं। यदि किसी को बहुत मिलता भी है तो वह महात्मा बुद्ध की तरह से बाएँ हाथ से स्वीकार करे और दाएँ हाथ से वितरित कर दे। निमित्त भाव से जो चीज़ें सम्भाली जाती हैं वे संग्रह नहीं कहलाती लेकिन मैं और मेरेपन से, लगाव और दिखावे से, अन्याय और शोषण से, माँग-माँग कर खींचने से जो एकत्रित किया जाता है वो संग्रह कहलाता है और अन्तत: आपसी एकता को तोड़ने के साथ-साथ व्यक्ति को उसके भाग्य और पुण्य से भी तोड़ देता है। एकता के किले की दीवार में कोई दरार नहीं आएगी यदि समूह में रहने वाले सभी लोग देने की भावना रखें। एकता के रथ में, देने के प्रतीक घोड़ों को आगे बाँधें। यदि घोड़ों को पीछे कर दिया अर्थात् देने के भाव को पीछे कर दिया तो रथ उलट जाएगा।

जब व्यक्ति में स्वयं में दुर्गुण होते हैं तो दूसरे में भी दिखाई पड़ते हैं। मनोवैज्ञानिक तथ्य यह है कि व्यक्ति अपने साथ खड़े व्यक्ति को गुणवान देखना चाहता है और गुण न दिखने पर अलग होने का प्रयास करता है। हद की दृष्टि होने पर भी एकता प्रभावित होती है। हद के विचार रखने वाले व्यक्ति किले के केवल उस हिस्से की मजबूती चाहते हैं जहाँ वो रहते हैं, बाकि भले ही कमजोर होता रहे, ऐसा वे सोचते हैं। परन्तु जो चीज सामूहिक है, जुड़ी हुई है, उसके एक हिस्से की कमजोरी सम्पूर्ण कमजोरी तो बन जाती है पर एक हिस्से की मजबूती सम्पूर्ण मजबूती नहीं बन पाती है। अत: एकता के सूत्र में बँधने के इच्छुक लोगों को कर्मों के गहन सिद्धान्तों की पूरी समझ रखनी चाहिए। **समूह में रहते हुए भी एक-दो पर आश्रित न रहकर स्वनिर्भरता से चलना, गुणवान होते हुए भी आत्मश्लाघा से बचना, कार्य मन लगाकर करना पर कार्य से मिली पदवी को मन से स्वीकार न करना, अपने से कभी बोझिल न होना, आवश्यकता पड़ने पर दूसरों के बोझ उठा लेना, कार्य करके दिखाने में विश्वास रखना, वर्णन करने में नहीं, परिस्थिति को सुअवसर समझ स्वीकार कर लेना - ये गुण समूह के प्रत्येक व्यक्ति में हों तो एकता का सूत्र अटूट रस्से में बदल जाता है।**

एक साझा लक्ष्य सबको निकट ले आता है। साझा लक्ष्य यदि अल्पकालिक और हद का हो तो उससे अल्पकालिक और हद की एकता निर्मित अवश्य होती है परन्तु सारी मानव जाति के लिए ऐसा साझा लक्ष्य क्या हो ? विचार करने पर हम पाएँगे कि एक ऐसी यात्रा जिसमें रास्ते सदा ही समानान्तर रहते हैं, अन्तर्मन की गहराइयों में उतर कर सम्पूर्णता को पाने की यात्रा हो सकती है। इस यात्रा के लिए साझा लक्ष्य है कि हम सभी पिता परमात्मा के समान गुणवान और शक्तिवान बनें। सागर में तैरती हुई नौकाएँ जब बीच के स्तम्भ को छूती हैं तो आपस में बहुत नजदीक आ जाती हैं। इसी प्रकार, सृष्टि रूपी सागर में तैरते हुए हम सभी का लक्ष्य भी सर्वोच्च पिता परमात्मा में समा जाना है। उनके समान बन जाना है। इस साझे लक्ष्य से ही एक धर्म,एक जाति, एक कुल, एक भाषा वाले एक विश्व की स्थापना हो सकती है।

★★★

पवित्र धन एवं सृष्टि का वास्तविक इतिहास

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

सनातन प्रश्न है कि बीज पहले था या वृक्ष। उसी प्रकार से, धन के बारे में भी प्रश्न है कि मनुष्य को धन बिगाड़ता है या मनुष्य ही धन का गलत तरीके से उपयोग करता है। अनेक विद्वानों के अनेक मत इस बारे में हैं। एक मत है कि धन भी एक सत्ता है और सत्ता मनुष्य को बिगाड़ती है और जितनी ज्यादा सत्ता उतना मनुष्य ज्यादा बिगड़ता है (Power corrupts & absolute power corrupts absolutely)। भूतकाल के इतिहास को देख कर अनुभव होता है कि सब प्रकार की सत्ता मनुष्य को अन्धा बना देती है। सत्ता के अभिमान में आकर मनुष्य जैसा और जितना चाहिए वैसा कदम उठा कर अपनी विचारधारा को मनवाते हैं। परिणामस्वरूप समाज को दंड भोगना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर, दूसरा विश्वयुद्ध जर्मनी और इटली के तानाशाहों ने ही किया और लाखों मनुष्यों की हिंसा हो गई। लौकिक जीवन में भी धनवान व्यक्ति अपनी कमजोरियों को न समझने के कारण और अपनी बातों को सिद्ध करने के लिए भ्रष्टाचार, पापाचार आदि का सहारा लेता है। समाज भी इसका अनुकरण करने लगता है। फिर बदनाम धन और सत्ता हो जाते हैं कि इन्हीं के कारण मनुष्य बिगड़ता है। परन्तु सतयुग के बारे में प्यारे शिव बाबा ने बताया है कि वहाँ धन-सत्ता, राज-सत्ता और धर्म-सत्ता एक के ही हाथों में हैं। फिर भी सभी सुख, शान्ति, आनन्द आदि का सर्वोच्च अनुभव करते हैं। उसी को रामराज्य या स्वर्ग भी कहा गया है। बाद में त्रेतायुग में शान्ति, आनन्द की अनुभूति में थोड़ी कमी होती है। फिर भी वहाँ पर भी सुख रहता ही है। अर्थात् त्रेतायुग में भी ये सत्ताएँ दुःख का कारण नहीं बनती हैं। वहाँ मनुष्य के अन्दर बहुत आध्यात्मिक शक्ति और सत्ता होने के कारण वह देवता के रूप में सुखी रहता है।

द्वापर की शुरूआत में देवताओं की पवित्रता और सद्गुणों की मात्रा में परिवर्तन होता है जिसको ही शिव बाबा ने अलंकारिक शब्दों में कहा है कि देवताएँ वाममार्ग में गए। भक्ति की भी शुरूआत होती है तो नए-नए धर्म भी आते हैं और सृष्टि रूपी रंगमंच का भूगोल बदल जाता है। नए-नए देश और व्यक्ति जन्म लेते हैं तथा नई आई हुई आत्माओं और पुरानी आत्माओं दोनों की सम्पूर्णता आठ कला आर्थात् आधी हो जाती है। मनुष्य अपने ऊपर अपना राज्य गँवा देता है और धीरे-धीरे विकारों के वशीभूत होता जाता है। फिर उस पर धन, राज्य और धर्म इन तीनों सत्ताओं का प्रभाव पड़ता है। स्व-स्थिति गँवाने के कारण आत्माओं की मनोकामनाएँ दूषित हो जाती हैं। रजो स्वरूप में वे धन को भोग रूप में, सत्ता को लोभ के रूप में और धर्म को आडम्बर के रूप में प्रयुक्त करने लगती हैं। कलियुग में यह दुरुपयोग और ही बढ़ जाता है। सतयुग में जिन सत्ताओं पर देवताएँ राज्य करते थे, कलियुग में वे सब मनुष्य के ऊपर राज्य करने लगीं। परिणामस्वरूप दुःख, अशान्ति, भ्रष्टाचार आदि बढ़ते गए। वर्तमान समय जिन्होंने भी धर्म-सत्ता और धन के इतिहास के बारे में लिखा है वे सभी द्वापरयुग के बाद के इतिहास को ही जानते हैं और इसी कारण यही कहते रहे हैं कि धन, सत्ता और धर्म ने मनुष्य को बिगाड़ा है।

यह पूर्ण वास्तविकता है कि सतुयग और त्रेतायुग की जनसंख्या, द्वापरयुग आने पर तीव्र वृद्धि के कारण भारतीय सभ्यता को भारत की सीमाओं से बाहर ले गई। वहाँ ही स्थाई रूप से रहने भी लगीं और आना-जाना करने लगीं। उसी को देख कर के द्वापरयुग के बाद में अर्थशास्त्री और इतिहासकारों ने यही लिखा कि आर्य सभी मध्य एशिया में रहते थे और वहाँ से भारत में आए थे। इस सम्बन्ध में आइनस्टाइन से सम्बन्धित एक मशहूर कहानी है। एक अन्धे मनुष्य को, आइनस्टाइन बता रहे थे कि दूध वह है जिसका रंग सफेद होता है। अन्धे व्यक्ति ने पूछा कि सफेद

क्या होता है? आइनस्टाइन ने जवाब दिया कि हंस जैसा होता है। अन्धे व्यक्ति ने आगे पूछा कि हंस क्या है? तो आइनस्टाइन ने कहा कि उसकी गर्दन गोलाकार होती है। तब उस व्यक्ति ने कहा - ''अभी मैं समझा कि दूध वह है जिसकी गर्दन गोलाकार होती है।'' इस प्रकार से मिसाल को मिसाल के रूप में न समझने के कारण मिसाल को ही सिद्धांत समझ लिया। अर्थशास्त्रियों और इतिहासकारों ने इसी प्रकार की भूल कर दी।

धर्म के क्षेत्र में भी यही भूल हुई है। इस क्षेत्र में परमात्मा के लिए कहा गया है कि वह सत्य है अर्थात् 'सत्य' परमात्मा का पहला लक्षण है परन्तु धर्मनेताओं ने लक्षण को ही लक्ष्य समझ लिया। इसी के कारण सत्य को परमात्मा मानने लग गए। इसी तरह परमात्मा प्रेम या स्नेह का सागर है परन्तु उन्होंने गलत समझ लिया और प्रेम या स्नेह को ही भगवान मान लिया। परिणामस्वरूप परमात्मा अर्थात् परम+आत्मा को उन्होंने निश्चेतन (abstract) अस्तित्व वाला बना दिया जिससे परमात्मा के सही स्वरूप, गुण, कर्त्तव्य, शक्तियाँ आदि के बारे में भ्रांति उत्पन्न हुई। मनुष्यों ने स्वयं की कमजोरियों को न स्वीकार करके कमजोरियों को धन, सत्ता एवं धर्म द्वारा उत्पादित मान लिया। इसी से यह गलत परिभाषा बनी कि धन माया है, धन का त्याग ही सर्वश्रेष्ठ अवस्था है।

इस प्रकार, विश्व के इतिहास की यह छोटी भूल व्यापक रूप में सभी प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं में आ गई है। परिणाम यह हुआ कि पूँजीपतिवाद (Capitalism), समाजवाद (Socialism), साम्यवाद (Communism), तानाशाही (Dictatorship) आदि-आदि अनेक वाद विडंबना के रूप में समाज में फैल गए। कल्याणकारी परमपिता परमात्मा धन, सत्ता और धर्म तीनों का वास्तविक स्वरूप वर्तमान संगमयुग में बताते हैं और तीनों का ही समन्वय करके हम आत्माओं को स्वर्ग के निर्माण के निमित्त बनाते हैं।

नेपालगंज (नेपाल)- विशेष समारोह में नेपाल उद्योग वाणिज्य महासंघ के अध्यक्ष भ्राता विनोद बहादुर श्रेष्ठ जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दुर्गा बहन ।

रूरा (उ.प्र.)- शान्ति उत्सव-04 कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए पंचायत राज्यमंत्री भ्राता रामस्वरूप सिंह गौर, उ.प्र. शासन, साथ में ब्र.कु. प्रीती बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. आशा बहन एवं डॉ. सुरेन्द्र तिवारी।

सत्य मिला तो झूठ छूट गया

ब्रह्माकुमार रवि, देहली

ब्र.कु. रवि भाई पिछले साढ़े तीन साल से राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं। आपके लौकिक परिवार के लगभग 20 सदस्य भी आपके साथ–साथ इस मार्ग पर अग्रसर हैं। देहली और अमृतसर में आपका उन्नत व्यापार है। घर–परिवार और व्यापार में रहते हुए निमित्त भाव धारण कर आप राजयोग के अभ्यास से चिन्ता, तनाव और नकारात्मक वृत्तियों से मुक्त हुए हैं। प्रस्तुत है इस सफल आध्यात्मिक यात्रा के बारे में 'ज्ञानामृत' से आपकी बातचीत।

प्रश्न : ज्ञान से आपका सम्पर्क सहजता से हुआ या बहुत ढूँढ़ना पड़ा ?

उत्तर : प्रीतम पुरा (देहली) में मेरे व्यवसायिक मुख्यालय के अति समीप जगमोहन नाम के ब्रह्माकुमार भाई का भी कार्यालय है। हमारा उनसे सम्पत्ति के लेन-देन का सम्बन्ध है। जब भी उनसे मिलना होता था तो वे ईश्वरीय ज्ञान की चर्चा करते थे। उनकी हर बात मुझे एकदम सत्य लगती थी। वे आत्मा, परमात्मा के बारे में जो कुछ बताते थे वह बहुत आकर्षक तथा तर्क की कसौटी पर एकदम खरा लगता था। उन दिनों मेरे मन में ईश्वर के बारे में काफी उलझन थी। हम वैष्णो देवी जाते थे। कभी सालासर और कभी मेहंदीपुर भी जाते थे। मैं देखता था कि हनुमान जी के मन्दिरों में भी एक में मूर्ति और प्रकार की और दूसरे में और प्रकार की है। प्रश्न उठता था कि क्या हनुमान जी भी दो प्रकार के हो गए हैं ? पूछने पर सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलता था। लौकिक परिवार में सिखाया गया था कि जब भी आप खाली हों, मुख से राम-राम का जाप करें। मुझे वह भी पसन्द नहीं आता था। हम सभी भाई आपस में विचार करते थे कि यदि कोई किसी का नाम लेता रहे तो क्या वह खुश हो जाएगा ? नहीं। तो फिर केवल राम-राम बोलने से क्या भगवान हम पर प्रसन्न हो जाएँगे ? इस प्रकार के प्रश्न उठते थे। वर्तमान असुरक्षा से भरे जीवन में प्रतिपल भगवान के सहारे की आवश्यकता होती है इसलिए भगवान में विश्वास पूरा था। कभी-कभी मुझे अहसास होता था कि हम कुछ नहीं कर रहे, कराने वाला कोई और है। सर्वशक्तिवान है। क्योंकि जिस काम को हम बहुत अच्छी तरह करते थे उसमें असफलता मिल जाती थी और जिस कार्य को ऐसे ही साधारण रीति से निपटाया जाता था उसमें मान-सम्मान की बहुत प्राप्ति हो जाती थी। यह सब देख मन में आता था कि हमारे हाथ में कुछ नहीं है, परमात्मा ही करनकरावनहार है।

प्रश्न : मुख्यालय की धरती पर पहली बार पाँव रखने का अनुभव सुनाइये ?

उत्तर : चार साल पहले यहाँ

शान्तिवन में भारत के चारों कोनों से रथ यात्राओं के आगमन पर भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ था। मैं मात्र जिज्ञासावश उसे देखने आया था, यहाँ आते ही मेरे अन्दर से आवाज आई कि यह वही जगह है जिसे मैं ढूँढ़ रहा हूँ। कदम रखते ही लगा कि यह

जानी-पहचानी जगह है। हर क्षेत्र में पवित्रता का साकार स्वरूप देखा। हम सुनते आए थे कि घर-गृहस्थ में काम आदि विकारों की आज्ञा है पर गृहस्थ से बाहर ये विकार नहीं होने चाहिएँ। मेरे मन में शंका थी कि भगवान ऐसे नियम कैसे बना सकते हैं कि किसी के लिए पवित्रता अनिवार्य और किसी को विकारों को भोगने की छूट। इस विद्यालय में आने पर मुझे बताया गया कि भगवान ने जो दुनिया रची थी उसमें सम्पूर्ण पवित्रता थी। मुझे यह सुन कर बड़ा सन्तोष हुआ कि भगवान ने जो दुनिया रची थी उसमें पवित्रता का नियम सबके लिए समान था अर्थात् सभी पवित्र थे। मुझे जैसे कि कल्प के प्रारम्भ की सतयुगी दुनिया की स्मृति आ गई।

धर्म के क्षेत्र में मेरा गहन अध्ययन नहीं था, यहाँ आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन में मैंने जब अन्य धर्मों के निमित्त बड़े लोगों के विचार सुने और साथ ही इस संस्था के ज्ञान से भी परिचित हुआ तो दोनों की तुलना की और प्यारे बाबा द्वारा दिया गया ज्ञान पूरी तरह स्पष्ट लगा। इनकी एक-एक बात मेरे हृदय में उतरती गई। जैसे आत्मा के बारे में ज्ञान मिला कि वह शरीर से भिन्न है, कर्मेन्द्रियों का कर्म आत्मा के आदेश से होता है। एक चालक के द्वारा जैसे गाड़ी को चलाया जाता है, ऐसे ही आत्मा भी शरीर को चलाती है। दूसरा, परमात्मा के सत्य परिचय की स्पष्ट तस्वीर मेरी बुद्धि में निर्मित हो गई कि वे ज्योति स्वरूप हैं, एक हैं, निराकार हैं और सर्वोच्च हैं। इससे पहले पारिवारिक गुरु के द्वारा दिया गया मन्त्र 'निराकार, निरंजन, ज्योतिस्वरूप परमात्मा, तू ही माई-बाप, सत् नाम तेरा,' मैं दिन में 5 बार स्मरण करता था। मुझे यहाँ आकर स्पष्ट हो गया कि यह परमात्मा की ही महिमा है।

प्रश्न : क्या योगाभ्यास ने आपको आनन्दित किया?

उत्तर : यहाँ आकर मुझे योग के सही स्वरूप का भी ज्ञान मिला। परमात्मा से आत्मा का प्रेम भरा मिलन ही वास्तविक योग है। यहाँ आने से पहले मैंने कई प्रकार के योगों का अभ्यास किया था। एक योग-विधि में मुझे बताया गया कि आँखें बन्द करके बैठो तो अन्दर-ही-अन्दर प्रकाश दिखेगा। पर कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इस विद्यालय में मुझे बताया गया कि आप भृकुटि के मध्य स्थित ज्योतिस्वरूप आत्मा हैं और आपके पिता भी ज्योतिस्वरूप परमपिता परमात्मा हैं और वे सर्वशक्तियों के सागर हैं। उनसे हम शक्तियाँ ले सकते हैं। यह मुझे बहुत अच्छा लगा। फिर मैंने स्वयं को आत्मा समझ परमपिता से बुद्धियोग लगाया तो बहुत शक्ति और शान्ति का अनुभव हुआ। कई लोग कहते हैं कि इस ज्ञान में धारणाएँ बहुत मुश्किल हैं परन्तु योग के द्वारा मुझे शक्तियाँ मिलती गईं और मैं सब धारणाओं को, जैसेकि गृहस्थ में पवित्रता, खान-पान की शुद्धि, व्यवहार शुद्धि आदि को सहज अपना सका। मुझे महसूस होने लगा कि राजयोग ने मुझे इतनी कमाल की शक्ति दी है जो असम्भव समझी जाने वाली धारणाएँ सम्भव हो गईं।

प्रश्न : क्या आप श्रीमद् भगवद्-गीता पढ़ते थे, क्या उसके बारे में कुछ नया प्रकाश मिला?

उत्तर : मैंने श्रीमद् भगवद्गीता के बारे में भी पढ़ा और सुना हुआ था। श्रीकृष्ण और परमात्मा एक हैं या अलग-अलग - यह प्रश्न भी मेरे मन में उठता था। यहाँ आकर मुझे मालूम पड़ा कि गीता ज्ञानदाता तो परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। जिस शरीर में आकर वे ज्ञान देते हैं, उस शरीर की आत्मा श्री कृष्ण की आत्मा होती है, जो भगवान के ज्ञान देने के समय अपने 84वें जन्म में होती है और नाम-रूप बदलने से वह प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में ईश्वर का साकार माध्यम बनती है। वहाँ घोड़ा-गाड़ी का रथ

दिखाया गया है परन्तु वास्तव में भगवान शरीर रूपी रथ के सारथी बनते हैं। पहले मैं सोचता था कि आत्मा शरीर का कोई हिस्सा है, जो शरीर की मृत्यु के समय शरीर से निकल जाएगी। मैं सोचता था कि आत्मा निकल जाएगी तो मेरा क्या नुकसान होगा क्योंकि मुझे यह समझ नहीं थी कि मैं ही आत्मा हूँ। परन्तु यहाँ आने पर मुझे जब बताया गया कि इस तन द्वारा बोलने वाली मैं आत्मा ही हूँ। मैं ही वो चैतन्य शक्ति हूँ, मैं मरूँगा नहीं, शरीर कपड़े की तरह उतर जाएगा और मैं आत्मा अपने कर्मों का लेखा-जोखा लेकर चली जाऊँगी तो एकदम से ही सब गुत्थियाँ सुलझ गईं। श्रीमद् भगवद्गीता की यह शिक्षा कि 'तुम नहीं जानते कि तुम्हारे और मेरे कई जन्म हो चुके हैं, मैं तेरे जन्मों को जानता हूँ' पढ़ कर मुझे लगा कि भगवान शिव के बिना सर्व आत्माओं के 84 जन्मों की कहानी कोई देहधारी सुना ही नहीं सकता।

महाभारत में वर्णित हिंसक युद्ध के बारे में मुझे स्पष्ट हुआ कि हमारी संस्कृति अहिंसा प्रधान है अर्थात् बुराई को मारने में विश्वास करती है, बुरे व्यक्ति को नहीं। अवश्य ही भगवान ने काम, क्रोध आदि शत्रुओं को मारने की आज्ञा दी होगी जिनको ही कौरवों के रूप में दिखाया गया है। युद्ध वास्तव में हमारे मन में निरन्तर चलने वाला अच्छाइयों और बुराइयों का युद्ध है। कुरुक्षेत्र वास्तव में कर्मक्षेत्र का प्रतीक है। कर्मक्षेत्र पर जो द्वन्द्व चलता है उसमें प्रबल बुराइयों को जीतना है। हिंसा करना, किसी को मारना यह गीता का सन्देश नहीं है। बुराइयों को जीत कर, मोह को नष्ट करके सम्पूर्णता प्राप्त करना ही गीता का सन्देश है। गीताज्ञान के समय के बारे में मुझे स्पष्टीकरण हुआ कि अति धर्मग्लानि का समय वर्तमान कलियुग है। इस समय पाप और भ्रष्टाचार चरम पर पहुँचे हुए हैं। मुझे लगा कि परमात्मा को अभी आना चाहिए। परमात्मा के आने के बाद तो हम ऊपर चढ़ेंगे, नीचे थोड़े ही गिरेंगे। इसलिए कलियुग में आकर वो सृष्टि को ही सतयुग में बदल देते हैं और हम भी देवता बन कर ऊपर चढ़ते हैं। परमात्मा के आने का समय संगमयुग है और संगमयुग अब चल रहा है।

प्रश्न : राजयोग से जीवन में व्यवहारिक प्राप्तियाँ क्या हुईं?

उत्तर : राजयोग के राजमार्ग पर चलने से पहले दुनिया को देखने का तरीका ही मेरा अलग था। मैं सांसारिक लोगों की तरह आधुनिक, स्वच्छन्द समाज, उन्मुक्त समाज का पक्षधर था। क्रोध मेरे में अति था। यहाँ आकर पता पड़ा कि हम आत्मिक रूप में भाई-भाई हैं और अभी कलियुग का समय है। समय अनुसार हमें अभी जरूर परिवर्तन होना है। समय अनुसार कार्य करने का अनुशासन मेरे में पहले भी था। जैसे जन्म के मौके पर हम खुशी मनाते हैं, मृत्यु के मौके पर हम गम्भीरता धारण करते हैं इसी प्रकार इस घोर कलियुग के समय में हमें अपने को बदलना है। पहले देह की दृष्टि से देखते थे अब आत्म-भाव पक्का हो गया है। मेरे कार्यालय तथा फैक्टरी में कुल 100 से भी ज्यादा कार्यकर्त्ता हैं। पहले जब उनसे कार्य कराता था तो अधिकार भाव रखता था। डाँट कर काम करवाता था। छोटी-सी गलती पर भी मैं क्रोध करता था। अब कार्यालय और घर, दोनों स्थानों पर मैं प्रेमपूर्वक कार्य करवाता हूँ। पहले मैं सोचता था कि यह व्यक्ति मेरे यहाँ काम करता है तो मानो हमारा नौकर है, मेरा अधिकार है उस पर परन्तु अभी मुझे पता पड़ गया है कि हम इस विशाल सृष्टि-नाटक के पार्टधारी हैं और आत्मिक नाते से भाई-भाई हैं। इस बात ने मेरी बुद्धि को पूरी तरह बदल दिया है। कार्यालय में मेरा पार्ट तो बॉस (मुखिया) का ही है परन्तु अब मैं अन्य साथियों को

रहम की दृष्टि से देखता हूँ। मेरा व्यवहार पूरी तरह बदल गया है।

प्रश्न : व्यवहार परिवर्तन से आपको क्या-क्या फायदे हुए?

उत्तर : पहले स्टाफ डर कर काम करता था। उनकी मेरे प्रति अच्छी भावना नहीं थी। वे यही सोचते थे कि गुस्से वाला अधिकारी है, काम कर दो नहीं तो निकाल देगा। अब जब से मैं बदला हूँ, उनके मन में मेरे प्रति श्रद्धा भावना बढ़ गई है। अब वे मेरी बात को सम्मान देते हैं। अब वे दिल लगाकर काम करते हैं जिससे कम समय में अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं। फैक्ट्री में भी मजदूर 12 घण्टे में जितना काम करते थे, अब 8 घण्टे में पूरा कर लेते हैं। अब वे फैक्ट्री को अपना समझते हैं और कार्य को जिम्मेवारी के भाव से करते हैं। हमारा प्यार उनको अच्छा लगता है। राजयोग के अभ्यास ने हमारे सोने-जागने को नियमित कर दिया। पहले 8 बजे या 9 बजे उठते थे, सोने का कोई समय ही नहीं था। परन्तु अब अमृतवेले उठने का लक्ष्य रखते हैं, चार और पाँच बजे के बीच उठ जाते हैं।

प्रश्न : आप में यह परिवर्तन शक्ति कैसे आई?

उत्तर : कहते हैं कि सत्यता मिलने पर झूठ छूट जाता है। अच्छाई मिलने पर बुराई छूट जाती है। ज्यादा मिलने पर कम छूट जाता है। यदि किसी को सौ रुपये मिलें तो वह पचास रुपये सहज छोड़ देता है। राजयोग से मुझे पूरी मदद मिली। पहले साल मुझे परमात्मा पिता से इतनी मदद की अनुभूति नहीं हुई परन्तु अब तो पल-पल लगता है कि वह पिता के रूप में कितना प्यार देता है, शिक्षक के रूप में, सद्गुरु के रूप में हमारी कितनी मदद कर रहा है। मैंने जो बुरी आदतें छोड़ी हैं उनका सारा श्रेय प्यारे शिव बाबा को जाता है। उनकी मदद ने मुझे महिमा योग्य बनाया है।

प्रश्न : आप क्या समझते हैं, ऐसे परिवर्तन से समाज और देश को फायदा है?

उत्तर : हमारा स्लोगन है स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। पहले मैं सुबह उठता था तनाव में और सारा दिन रहता था तनाव में। खुशी दो मिनट की पर उलझन दिन भर रहती थी। बुद्धि को एकाग्र करने के लिए कोई ठिकाना नहीं था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि सोच पर भी हमारा नियन्त्रण हो सकता है। मैं मानता था कि कर्म पर तो नियन्त्रण हो सकता है पर संकल्पों पर असम्भव है। यह नई बात मैंने यहाँ आकर सीखी। पूरे जीवन से व्यर्थ खत्म हो गया। मैं चाहता हूँ कि मेरे जैसा परिवर्तन समाज और देश-विदेश के हर नागरिक का हो। मुझे जो शान्ति, शक्ति, स्थिरता, पवित्रता, निश्चिन्त जीवन तथा अन्य अनगिनत प्राप्तियाँ हुई हैं वे सभी को हों। यदि ऐसा हो जाए तो समाज और देश समस्यामुक्त, क्रोधमुक्त, हिंसामुक्त, तनावमुक्त, विकारमुक्त हो जाएँगे। एक श्रेष्ठ समाज बनेगा। मेरी व्यक्तिगत सहायक बहन मेरे परिवर्तन से इतनी प्रभावित हुई है कि अब वह भी नियमित राजयोग का अभ्यास करती है।

प्रश्न : भविष्य पुरुषार्थ की क्या योजना है?

उत्तर : प्यारे बाबा ने लक्ष्य दिया है कि नर से नारायण बनो। इसके लिए मेरी सोच बेहद की है, लास्ट सो फास्ट जाने का लक्ष्य सामने है, हर आत्मा के प्रति कल्याण भावना है, तन, मन, धन से प्यारे बाबा की सेवा में रत हैं। अब एक तो भगवान में अटूट एकान्तिक प्रेम और दूसरा, इतना सुन्दर ज्ञान सभी आत्मा रूपी भाइयों को मिल जाए, वे राजयोगी और गुणवान बन कर सशक्त बन जाएँ - ये दो बातें ही लक्ष्य के रूप में सामने हैं।

✤✤✤

'पत्र' सम्पादक के नाम

प्रश्न : क्या ब्याज पर धन देना श्रीमत के विरुद्ध है ?

उत्तर : साकार में प्यारे बाबा कहते थे कि बच्चे धन लेकर ईश्वरीय कार्य नहीं करो। बाबा लौकिक कार्य अर्थ भी उधार लेने के बजाए खर्च को ही कम करना श्रेयस्कर समझते थे। इसके पीछे स्पष्ट कारण यह है कि धन उधार लेने और देने वाले दोनों ही उस धन के साथ मन को भी किसी सीमा तक गिरवी रख देते हैं। क्योंकि जहाँ धन होगा वहाँ मन जाएगा। परन्तु आजकल बैंकों में या अन्य किसी विश्वसनीय कार्य-योजना में इस प्रकार धन जमा किया जा सकता है कि जमा करने वाले की बुद्धि निश्चिन्त भी रहती है, उसे आय भी होती रहती है और इस प्रकार समय की बचत कर वह ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बन कर भाग्य जमा कर सकता है। इस प्रकार जमा कराकर निश्चिन्त जीवन जीने की प्रेरणा बाबा देता है। बाबा कहते हैं- ''बच्चे, यदि पर्याप्त धन है तो उसे बैंक में डालो, ब्याज से काम चलाओ और जीवन को ईश्वरीय सेवा में सफल करो। ज़्यादा भागदौड़ करने की ज़रूरत नहीं है।'' जीवन निर्वाह योग्य धन होते भी यह अधिक धन कमाने की लालसा से समय, शक्ति और संकल्प लगते ही रहें तो ईश्वरीय सेवा कब करेंगे। अत: प्यारे बाबा की श्रीमत है कि व्यक्तिगत स्तर पर उधार लेन-देन न करके विश्वसनीय कार्य-योजना अथवा बैंक में धन जमा कर सकते हैं। उस ब्याज रूपी आमदनी में माथा भारी होने जैसी कोई बात नहीं होती।

✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷

नवम्बर, 2003 के अंक में 'दया धर्म का मूल है' लेख बड़ा अच्छा लगा। बड़ी शक्ति मिली। वैसे तो सारा ज्ञानामृत ही अथाह सागर है, सारा ज्ञान से भरपूर है। फिर भी मानव को मानवता की ओर मोड़ने वाले ऐसे लेख अवश्य आयें। जीवन में किसी को ठुकराने की बजाय सँभालें। किसी को गिराएँ ना, दबाएँ ना, किसी को झुकाने की बजाय खुद झुकना सीखें। भूले को राह बता दें। भूखे को खाना खिला दें, प्यासे को पानी, वस्त्रहीन को वस्त्र दें। बस, सेवा करो और भूल जाओ का पाठ याद रखो। परमात्मा के प्यार में सारा जीवन व्यतीत हो, बस। पवित्रता के साथ रहें। विकारों पर विजय प्राप्त करें। निरहंकारी, निर्विकारी बनें।

– ब्र.कु. गौरीशंकर गोयल, सिवानी मन्डी (हरियाणा)

✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷

संसार, घर, परिवार में दिन-रात उठने वाली समस्याओं से सम्बन्धित बातें ही आप के सम्पादकीय लेख में आती हैं। इन सारी बातों की भासना आप को पहले से ही आती है क्या ? अगर पहले ही आ जाती है तो ऐसे ही सम्पादकीय भेजते रहें जिससे नई आत्माओं को आश्चर्यजनक जानकारी मिलेगी और पुरुषार्थी जीवन में जो अलबेले होकर चल रहे हैं उन्हें जागृति की घुट्टी मिलती रहेगी। मुझे ज्ञानामृत ही संजीवनी बूटी देती आयी है।

– ब्र.कु. जयप्रकाश, गाँव पंजबारा (बिहार)

✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷ ✷

ज्ञानामृत मासिक के नवम्बर, 2003 के अंक में प्रकाशित 'सुनने की शक्ति' अच्छा लगा। इसमें जो वास्तविकता है उसे ही बाताया गया है। आज के युग में बोलना सभी जानते हैं लेकिन उन्हें सुनना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है। कम अर्थात् जहाँ उचित है केवल वहाँ बोलने से मानव के ज्ञान के साथ-साथ उसकी शालीनता का भी पता चलता है जिससे मानव आदर्श बन जाता है। कम बोल कर वह अपनी शक्ति भी बचाता है।

– ब्र.कु. तारेन्दु सिंह चन्द्रा, ओड़ेकेरा (छ.ग.)

✦✦✦

मेरी ही परीक्षा क्यों?

ब्रह्माकुमार बिहारी, गोरखपुर

कई बहन-भाइयों की यह फरियाद रहती है कि जब से हम ईश्वरीय ज्ञान में आये हैं, तब से विघ्न भी बहुत आते रहते हैं। कभी शरीर की नाजुक स्थिति, तो कभी पारिवारिक परिस्थिति, कभी वियोग तो कभी कर्मों का भोग, कभी व्यापार में घाटा, तो कभी माया का चाँटा। नियमित मुरली सुनता हूँ, श्रीमत पर चलता हूँ, सेवा भी करता हूँ, फिर भी न जाने भगवान मेरी ही परीक्षा क्यों लेता है?

क्यों होती है परीक्षा?

पढ़ाई के साथ परीक्षा, जीवन के साथ जंग और सागर के साथ लहर जुड़ी हुई है। कुदरत के इस नियम को हम बदल नहीं सकते लेकिन परीक्षा, परिस्थिति और लहर को सहज रीति से पार कर सकते हैं। कसौटियाँ कल्याण की परम सोपान हैं। जिसे हम प्रतिकूलता कहते हैं वह वास्तव में वरदान है क्योंकि अनुकूलता में विवेक सोता है और प्रतिकूलता में विवेक जागता है। जितनी बड़ी जिम्मेवारी उठाएँगे उतनी ही बड़ी परीक्षा भी होगी। हमने भगवान से प्रतिज्ञा की है कि चाहे दुनिया बदल जाए, चाहे काँटों पर सोना पड़े, चाहे मौत स्वीकार करनी पड़े पर तेरा हाथ और साथ नहीं छोड़ेंगे। परिवार या प्रकृति कितना भी हलचल में लाये पर हम अंगद की तरह अचल-अडोल रहेंगे। पावन बन, पावन दुनिया की स्थापना में मददगार बनेंगे, रावण सम्प्रदाय को राम-सम्प्रदाय में और भारत-नर्क को भारत-स्वर्ग में बदल देंगे। तो जहाँ कसम है वहाँ कसौटी भी है, प्रतिज्ञा है तो परीक्षा भी है। भगवान हमें अपनी वसीयत का वारिस बनाने वाले हैं। ज़रा सोचिए - इतना बड़ा अखण्ड, अटल, सुख-शान्तिमय 21 जन्मों का राज्य-भाग्य और परीक्षा कुछ भी न हो, यह कैसे हो सकता है? सदैव याद रखिए –

जिसे वो देना चाहता है,
उसी को आज़माता है,
खजाने रहमतों के,
इसी बहाने लुटाता है।

आपने देखा होगा कि जिस खूँटे के सहारे पशु को बाँधा जाता है उसे नौकर हिलाकर देखता है कि खूँटा कमज़ोर तो नहीं है। फिर मालकिन उसकी मज़बूती की कसौटी लेती है। अंत में घर का मालिक भी आज़माता है कि खूँटा हिलता-डोलता तो नहीं है? अब ज़रा सोचिये - एक खूँटे को जिसके सहारे पशु बाँधना है, इतना आज़माया जाता है तो आपके सहारे तो पूरे विश्व को बाँधना है तो ऐसे सेवाधारी की आज़माइश न हो, यह कैसे हो सकता है?

जितनी परीक्षा उतनी मज़बूती

साधक विघ्न, बाधाओं से खेल कर ही मज़बूत होता है। जितनी परीक्षा उतनी मज़बूती। कच्ची मिट्टी को साँचे में डाल कर, आग में डालते हैं तो मज़बूत ईंट बन जाती है, सोना आग में तप कर ही निखरता है। मूर्ति मंदिर में पूजने लायक तब बनती है जब मूर्तिकार के हथौड़े खा लेती है। अत: परीक्षाएँ भी इसलिए हैं कि आपका परमकल्याण होने वाला है। ये परीक्षाएँ आपका विवेक-वैराग्य जगा कर, नश्वर शरीर-संसार और परिवार से आसक्ति छुड़ा कर आपको सम्पूर्ण नष्टोमोहा बनाना चाहती हैं।

हार स्वीकार न कीजिए, परीक्षा पार कीजिए

हार स्वीकार न करके दृढ़ निश्चय से परीक्षा पार करनी है। किसी भी दशा में माया से हार नहीं खानी है। हार खाना माना प्रतिज्ञा तोड़ना। हमारे सामने पिताश्री ब्रह्मा का उदाहरण है। क्या उनके सामने परीक्षाएँ नहीं आईं? परीक्षा पार करके ही वे सर्वोत्तम पद के अधिकारी बने। कठिन से कठिन परीक्षा में प्रतिज्ञा को निभा लेना ही 'प्राण जाए पर वचन न जाए' चरितार्थ करना है। किसी भी परिस्थिति में अपनी प्रतिज्ञा को न तोड़ना, वचन देकर वापस न लेना तथा वायदा करके मुकर न जाना, यही तो दृढ़ प्रतिज्ञ आत्मा की शोभा है। 'खुशी आई तो प्रभु पर फिदा, दु:ख आया तो जुदा' यह बलिहार जाने की निशानी नहीं है। परीक्षा से घबरा कर आशिक कभी माशूक को छोड़ता

नहीं और माशूक, आशिक को भूलता नहीं। योगी दु:ख में घबराता नहीं और सुख में फिसलता नहीं। योगी तो परीक्षा का आह्वान करता है क्योंकि परीक्षा में खुद का छिपा हुआ कल्याण देखता है। इसलिए तो कहा जाता है –

ए बला आ,
तू मेरे लिए बरकत होगी,
तेरे पर्दे में छुपी
मेरे रहमान की रहमत होगी।

अगर हमने अपना सब कुछ भगवान को समर्पित कर दिया है तो दु:ख, विपत्ति, परिस्थिति अब हमारी कैसे? अब रोग-शोक की चिन्ता कैसी? हमारी चिन्ता अब उनकी चिन्ता हो गई। परीक्षा हो, घबराएँ नहीं, पुरुषार्थ करते जाइए, जिम्मेवारी सम्भालते जाइए और जो भगवान के जिम्मे है वह उन्हें करने दीजिए। ज्ञानी वे हैं जो हर हाल में खुश रह कर अपने से सन्तुष्ट रहते हैं। सुख में भी वाह-वाह तो दु:ख में भी वाह-वाह। अज्ञानी कभी सन्तुष्ट नहीं होता और ज्ञानी कभी असन्तुष्ट नहीं होता। दु:ख में रोता है भोगी और हँसता है योगी। भोगी गम में गलता है और योगी ज्ञान में रमता है। निर्भय हो कर पुरुषार्थ करते जाइए। आपके सामने परिस्थितियाँ हार मानेंगी। माया रूपी कागज का शेर जल कर भस्म होगा। आप परीक्षा में 'पास विद् ऑनर' हो कर नम्बर वन में जायेंगे। हिम्मत न हारिए, पुरुषार्थ करते जाइए। सतयुग की सारी जागीर आपकी है।

ब्र.कु. विरेन्द्र, प्रेमनगर, इन्दौर

संगम के रूहानी नशे में होवो ऐसे चूर।
यह दुनिया दिखने लगे मानो उड़ती धूर।।
मानो उड़ती धूर याद कलियुग की भूले।
सदा अतीन्द्रिय सुख में अपना मनवा झूले।।
नशा चढ़े ऐसा कि कुछ दिखने नहीं पावे।
मधुबन, परमधाम, सतयुग ही दृष्टि में आवे।।

पिता हमारा एक शिव, जो सर्वोच्च महान।
जग में सबसे उच्च, हम ब्रह्मा की सन्तान।।
ब्रह्मा की सन्तान, जगी तकदीर हमारी।
हम बच्चे ही बने स्वदर्शन चक्रधारी।।
सतयुग में हम छतरधारी हैं कहलाते।
सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति पा जाते।।

हम हैं चोटी जगत की हीरे-सा है मोल।
हम बेहद का पढ़ रहे इतिहास-भूगोल।।
इतिहास-भूगोल, ग्रहण माया का छूटे।
सबसे बड़ी लॉटरी नाम हमारे छूटे।।
गायन होता सारे जग में सिर्फ हमारा।
पूजा जाता हर मंदिर में चित्र हमारा।।

हमको सारे विश्व में तीनों कालों का है ज्ञान।
हम बच्चों को पढ़ा रहे आज स्वयं भगवान।।
आज स्वयं भगवान, हमें राजयोग सिखलाते।
राजाओं का राजा हमको सहज बनाते।।
युनिवर्सिटी में हम नित्य पढ़ने जाते हैं।
पदमापदम भाग्यशाली हम कहलाते हैं।।

भक्त जिसे हर जन्म में करें याद-फरियाद।
वह शिव ईश्वर प्रातः नित्य देता हमको याद।।
देता हमको याद कहे तुम सबसे प्यारे।
बच्चे सिर्फ तुम्हीं हो मेरे नयनों के सितारे।।
एक जन्म में 21 जन्म का हम वर्सा पाते।
मीठे बच्चे, कहकर बाबा हमें बुलाते।।

चमत्कारी अनुभूति

ब्रह्माकुमार ब्रह्मकिशोर, सेवानिवृत्त ज़िला व सत्र न्यायाधीश, इलाहाबाद

मई 2002 में मैंने ईश्वरीय पाठशाला में सात दिनों का प्रारम्भिक कोर्स किया और तब से ही मेरी दिनचर्या में मूलभूत परिवर्तन आया। मेरे जैसा देर तक सोने वाला व्यक्ति जिसने उगता हुआ सूरज न देखा हो, ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर पाँच बजे 'कक्षा' में पहुँचने लगा। सुबह की ताजी हवा से शरीर में हल्कापन, मन में स्फूर्ति और उमंग का अनुभव हुआ। इसके बाद विधिवेत्ताओं के राष्ट्रीय सेमीनार अर्थ आबू पर्वत स्थित संस्था के मुख्यालय में जाना हुआ।

मेरे पास एलार्म घड़ी नहीं थी। रात को नौ बजे सोते समय, प्रभु को बारम्बार याद किया और जोरदार प्रार्थना की कि मुझे सवेरे चार बजे अवश्य जगा देना। प्रकृति का चमत्कार कहूँ या शिव बाबा की अनुकम्पा? मेरी नींद ठीक चार बजे स्वत: खुल गई। सुबह का भ्रमण, शीतल मन्द सुगन्धित समीर और उगते सूरज के बदलते रूप-रंग – इन सबको पहली बार अनुभव किया। शरीर में एक खुशी भरी सिहरन थी। दुनिया अभी निद्रा के आगोश में थी और मैं एक योगी की तरह ज्ञान में जाग रहा था। ऐसा प्रतीत हुआ कि जीवन का यही सही रास्ता है। जिस व्यक्ति ने जीवन के 74 वर्षों तक किसी नियमित दिनचर्या का पालन न किया हो, उसके जीवन के 75वें वर्ष में इतना बड़ा परिवर्तन शिव बाबा की अनुकंपा से ही सम्भव हो सका।

आबू में हमारा निवास अति हृदयग्राही और मनोरम स्थान पर था। दूर तक हरियाली ही हरियाली, झूमते पेड़-पौधे, खिल-खिलाते नाना प्रकार के बहुरंगी फूल, साफ-सुथरी एकाकी सड़कें, शुद्ध-ताज़ी पहाड़ी हवा और चारों ओर शान्ति-ही-शान्ति। सब मिलाकर एक नैसर्गिक वातावरण, जो सहज ही सांसारिक प्रलोभनों से हटाकर अध्यात्म की ओर प्रेरित करता था। जिधर नज़र घुमायें, वहीं स्वच्छ, साफ, सरल, सफेद वस्त्र धारण किये, सेवाधारी, कार्यकर्त्ता, ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ दिखाई देते थे। सभी के चेहरों पर हल्की मुस्कान, दमकती आँखें, ममतामयी दृष्टि, सरल सहज व्यवहार, निश्छल आत्मीयता और नि:स्वार्थ सेवा करने की ललक स्पष्ट झलकती थी। बस, ऐसा लगता था कि जैसे ये फरिश्ते और परियाँ स्वर्ग से उतरकर इस पवित्र भूमि को और भी पावन एवं मनोरम बना रहे हैं।

चार दिनों के प्रवास में निरन्तर ज्ञान सुनते-सुनते ऐसा प्रतीत होता रहा कि मानो ज्ञान रूपी अमृत की वर्षा हो रही हो और हम उसे अंजलि भर-भर पीते नहीं अघा रहे हों। अन्तिम दिन बड़ी दादी जी ने विदाई सन्देश में ज्ञान का सार बतलाया। फिर बोली - ''प्यारे भाई-बहनो, अपने सेवा स्थान पर पहुँचकर दादी को चिट्ठी लिखना कि सकुशल पहुँच गए। यह 'बापदादा' का घर है यानी तुम्हारा अपना घर है। यहाँ बार-बार आना है।''

वापसी के समय कमरे से कार तक, फिर कार से बस तक हमारा सामान सेवाधारी युवकों ने उठाकर पहुँचाया। बोले - ''बाबू जी, अब कब आइयेगा?'' ज्ञान सरोवर से प्रस्थान करते समय जब आश्रम की बस में बैठे, तो आँखें नम हो गईं, गला रुँध गया। मन जाने को नहीं कर रहा था। लगा कि सच में हमारा असली घर तो यही है। इसे छोड़ कर हम क्यों जा रहे हैं लेकिन लौकिक सम्बन्धों और जिम्मेदारियों को तो शरीर रहते निभाना ही पड़ता है। आबू रोड स्टेशन पर फिर सेवाधारी युवकों ने हमारा सामान बस

से उतारा और बोले - ''आप फिर आइयेगा।'' जब हम बस से नीचे उतर कर चलने लगे तो बस ड्राइवर बोला - ''बाबू जी, फिर कब आइयेगा ?''

मैं बहुत समय तक इसी सोच में उलझा रहा कि इतना स्नेह, आत्मीयता और सेवा-भाव अपने लौकिक घर, परिवार और समाज में देखने को नहीं मिलता। फिर यहाँ ऐसा क्यों है ? बहुत चिन्तन-मनन के बाद समझ में आ गया कि यहाँ पर सभी लोग मानते हैं, समझते हैं और महसूस करते हैं कि हम सभी आत्मायें उसी शिव बाबा की सन्तान हैं। हमारा परमपिता एक ही है। फिर यह तो ब्रह्मा बाबा का पवित्र पावन साधना-स्थल है, इसलिए साधना का भी तो पवित्र प्रभाव चारों ओर व्याप्त है। अब जबकि मैं कर्म-स्थल पर लौट आया हूँ और लौकिक कर्त्तव्यों में व्यस्त हूँ, तो बरबस आकलन करता हूँ कि मैंने क्या खोया, क्या पाया ? मैंने खोया है - आलस्य, कुंठा, माया से मोह, देह-अभिमान और स्वार्थ। और मैंने पाया है - पुरुषार्थ, सहनशीलता, आत्मा का आभास, पवित्रता, आत्मीयता और सेवाभाव। अब मैंने बाज़ार की बनी खान-पान की वस्तुओं का बहिष्कार कर दिया है, प्याज, लहसुन, तीव्र मिर्च, मसाले त्याग दिए हैं, सफेद वस्त्रों के प्रति रुचि हो गई है और प्रत्येक शौच के बाद स्नान की आदत पड़ गई है। जरा सोचिये, शिव बाबा ने चार दिनों में ही मुझे बेशकीमती रूहानी दौलत सौंप कर कर्म-स्थल पर अपने ''मीठे बच्चों'' की सेवा करने को भेज दिया है। अब मैं भटकती हुई आत्मा नहीं हूँ। मुझे अपनी मंजिल, परमात्मा प्राप्ति का सही रास्ता मिल गया है। हाँ, आत्मा जरूर प्यासी है क्योंकि यह रूहानी प्यास, कितना ही ज्ञान रस पिओ, बुझती ही नहीं। कभी-कभी लगता है कि मेरा शरीर तो कर्म-स्थल पर लौट आया है पर आत्मा अभी भी 'मधुबन' में प्यास बुझा रही है।

✤✤✤

मानवता का गीत

– प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

संस्कार की पाटी पर हम, मानवता का गीत लिखें।
भावनाओं का हो गुलदस्ता,
नेह–प्यार का उपवन हो।
करुणा और दया से जगमग,
सदा–सदा अंतर्मन हो।
अमिट रहे जो युगों–युगों तक, आओ, हम वो प्रीत लिखें।

घर–प्रांगण में बिखरें किरणें,
अपनेपन का दीप जले।
हर पल विहंसे नव उजास से,
गहन तिमिर निज हाथ मले।
क्षण में जीतें सभी हृदय, आओ, हम वो जीत लिखें।
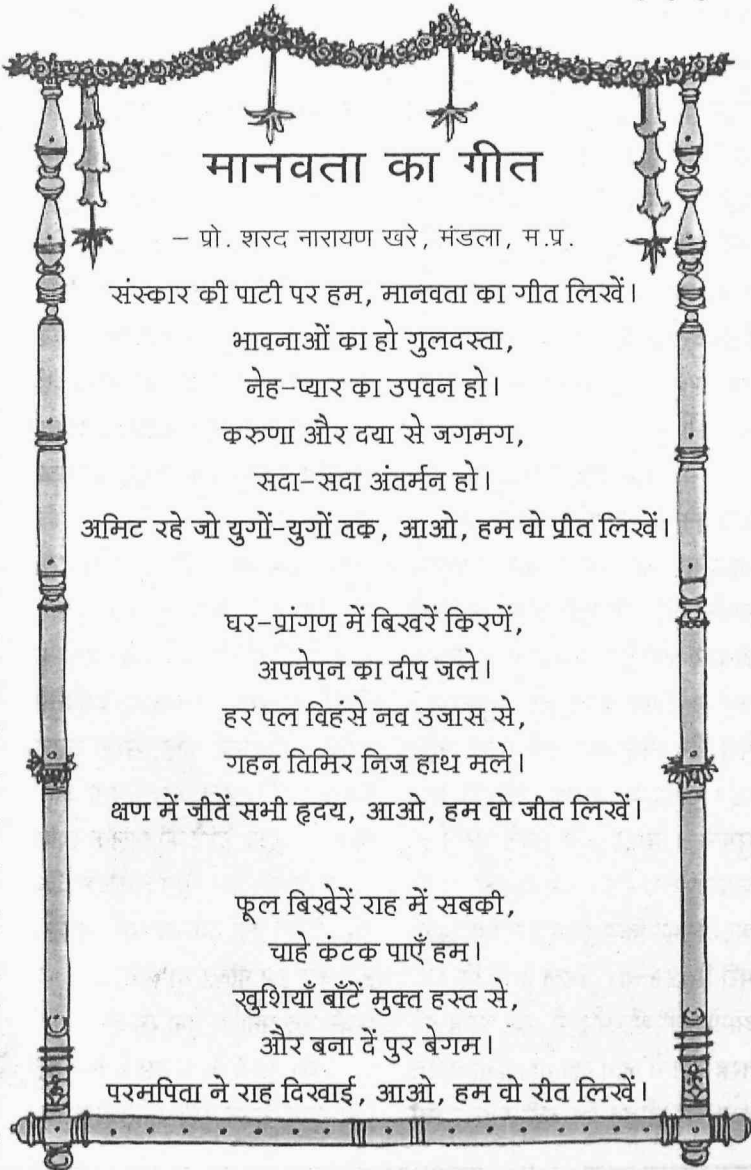
फूल बिखेरें राह में सबकी,
चाहे कंटक पाएँ हम।
खुशियाँ बाँटें मुक्त हस्त से,
और बना दें पुर बेगम।
परमपिता ने राह दिखाई, आओ, हम वो रीत लिखें।

आध्यात्मिकता के साथ शिक्षा में नई दिशा

ब्रह्माकुमारी रश्मि, आबू रोड

आज हम युग परिवर्तन की महाक्रांति के समय पर खड़े देख रहे हैं कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद राजनीति, उद्योग, व्यापार, शिक्षा, धर्म, साहित्य, कला इत्यादि हर क्षेत्र में चरित्र और नैतिकता का अध:पतन हो गया है। आपसी स्नेह, विश्वास, सहयोग और सुसंवादिता के स्थान पर वैरभाव, संघर्ष, स्पर्धा, हिंसा, तनाव जैसे नकारात्मक भावों ने सामाजिक जीवन में अशांति, भय और असुरक्षा का वातावरण बना दिया है। मूल्यों और नैतिकता के अध:पतन से शिक्षा का क्षेत्र भी बचा नहीं रहा है। प्राचीन भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों - सत्य, अहिंसा, प्रेम, त्याग, बलिदान, सेवा, परोपकार आदि की धुलाई हो गई है जो कि शिक्षाविदों की चिंता का कारण बन गया है। समय की माँग है कि सारी शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन हो। आध्यात्मिकता के स्पर्श से उसे जीवंत और फलदायी बनाया जाए। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के द्वारा छात्रों की आंतरिक चेतना को जागृत और सशक्त किया जाए क्योंकि आज पढ़ना चाहिए यह सब मान रहे हैं लेकिन क्या पढ़ना चाहिए यह कोई नहीं जानते।

हम देख रहे हैं कि विज्ञान ने गति तो दी है लेकिन दिशा नहीं दी है। आधुनिक युग का मानव ऐसा है जिसका गीत-संगीत गगन में पहुँच रहा है परन्तु पृथ्वी की स्थिति से वह अपरिचित बनता जा रहा है।

सुखमय जीवन एक कला है। शान्ति को जारी रख कर उसको बनाए रखना भी एक विद्या है। जीवन क्या है, उसका अध्ययन भी एक विज्ञान है। अगर मन की शान्ति के बिगर सुख पाने के लिए धन कमाएँगे तो सब निरस और व्यर्थ है। जीवन को निश्चिंत, निर्भय और सदा हर्षपूर्ण बनाए रखने की कला सीखे बिगर मनुष्य महल-गाड़ी, नौकर-चाकर, धन-पदार्थ, घर-परिवार होने पर भी सुख की साँस नहीं ले सकता है। फलस्वरूप दुर्घटना, हानि, शोक, असफलता आदि परिस्थितियों के घेराव से छूट नहीं सकता है।

अब आवश्यकता यह है कि जैसे आग बुझाने के लिए अग्निशामक यंत्र व जल-भण्डार की पहले से व्यवस्था होती है, वैसे अशान्ति और दु:खदायी परिस्थिति के आने से पहले ही व्यक्ति को बचाव की विद्या का अभ्यास जारी रखना चाहिए। समाज सिर्फ भौतिक वस्तुओं का संग्रह ही नहीं है। विज्ञान की प्राप्ति ही समाज का मापदण्ड नहीं बन सकती है। समाज चेतनमूर्त है और वह प्रेम, सद्भावना, आपस में भ्रातृत्व-भाव, नैतिकता तथा मानवीय मूल्यों के आधार से चलता है। एक प्रगतिशील और श्रेष्ठ समाज की स्थापना मूल्यों के आधार पर ही हो सकती है। अभी मूल्यों का केवल अभाव ही नहीं लेकिन भयंकर दुष्काल पड़ा है। शैक्षणिक जगत में भी इस अकाल के स्पष्ट चिन्ह उभर रहे हैं।

शिक्षा को सुधारने के लिए 'धर्मनिरपेक्षता' के नाम से नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यपुस्तकों में स्थान देने के सम्बन्ध में लोगों का विरोध उठता रहा है। वे यह भी नहीं सोचते कि 'धार्मिक शिक्षा' और 'आध्यात्मिक शिक्षा' एक-दूसरे के पर्यायवाची नहीं हैं। अब ज़रूरत है नई शिक्षा पद्धति की जो विद्यार्थियों को भौगोलिक ज्ञान तो दे पर साथ में तीनों लोकों का भी ज्ञान कराए। हमारा देश कौन-सा है - यह तो बताते हैं लेकिन शरीर से भिन्न जो शाश्वत आत्मा है वह कौन-से देश की निवासी है और वह देश कहाँ पर है, आत्मा

कैसे इस भूमण्डल पर आई, यह ज्ञान देना भी ज़रूरी है। आत्मा के नाते से सब धर्मों की आत्माएँ आपस में भाई-भाई हैं, यह भी समझाना है जिससे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'धार्मिक एकता' की भावना जागृत हो। जैसे देश की रक्षा के लिए सरकार बहुत प्रयत्नशील है वैसे ही आत्मा के ऊपर मनोविकारों ने जो घेराव डाला है उससे हम कैसे सुरक्षित रहें यह सीख भी दी जानी चाहिए। इन सबकी वर्तमान समय बड़ी जरूरत है। शरीर विज्ञान और आरोग्य विज्ञान का ज्ञान लाभदायी है परन्तु साथ ही मनोबल, आत्मबल, आत्मविश्वास तथा आत्मिक आरोग्य का ज्ञान भी दिया जाय तो लाभप्रद बनेगा। जैसे शरीर के स्वास्थ्य के लिए उपचार ज़रूरी हैं वैसे ही आत्मा के तीन मुख्य अंग मन-बुद्धि-संस्कार जो कि बीमार होते जा रहे हैं उनको कैसे ठीक किया जाय - यह जानना भी ज़रूरी है।

संक्षेप में, शरीर और आत्मा के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान है और पूर्णता की प्राप्ति के प्रतीक स्वरूप कमलपुष्प के बीच देवी-देवताओं को दिखाते हैं। सम्पूर्ण मानव उसको ही कहेंगे जिसमें दिव्यगुणों की

शेष पृष्ठ 18 पर

''जलाई नहीं तो मनाई नहीं''

(ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

पहले पकती ''डोली'', फिर जलती होली,
फिर हो-ली सो हो-ली, फिर रंग-बिरंगी 'होरी'।
ग़र ''डोली'' में नहीं बाँधी डोरी, तो फिर कैसी होरी,
ग़र न जली तो मना न सके कोई आत्मा होली।
ग़र जलाई नहीं तो मनाई नहीं
ज्योत जगाई नहीं तो खुशी पाई नहीं
होली के भी बहुत कुछ मायने हैं –
जो समझे इनको वो ही मन बड़े सयाने हैं।
सत्संस्कार पकाना आत्मन्! अपने विकार जलाना।
बीती को भुलाना भ्रातृजन! खुशनुमा संसार रचाना।।
इसी राज़ ने भीतर की कली खिलाई;
ग़र कली खिलाई नहीं, तो रास मिलाई नहीं,
फिर चैन की वंशी बजाई नहीं, तो होली मनाई नहीं।
ग़र जलाई नहीं तो मनाई नहीं।।
इक रंग ले लो आत्म भान का, दूजा परमात्म याद का –
तीजा रंग तो ज़रूर शुभ भाव का,
औ फिर विश्व कल्याण का –
यह अद्‌भुत रंग तुम जुटालो, औ दिल को साफ़ करो।
नाचने, गाने, गले मिलने हेतु, पहले सबको माफ करो!!
इसके बिना आत्मन्! इस जैसी कहीं कोई सच्चाई नहीं।
ग़र दिल में सच्चाई नहीं, तो होली जलाई नहीं।।
जलाई नहीं तो मनाई नहीं!

स्वनिर्भरता

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

मानव सामाजिक प्राणी है। जन्म से मृत्यु तक हर कार्य में समाज और परिवार पर आधारित रहता है। समाज से कटकर यदि उसे रहना पड़ जाए तो विकास की प्रक्रिया रुक जाती है। उपरोक्त बात के नितान्त सत्य होने के बावजूद उसे स्वावलम्बी होने का पाठ भी पढ़ाया जाता है। समूह में भी रहना और अपने आप पर ही निर्भर रहना, ये दोनों विरोधी बातें हैं परन्तु इन विरोधों को साथ लेकर चलना ही जीवन जीने की कला है।

यदि वह यह सोचे कि सभी के बीच में ही रहना है तो मैं इन सभी के सहारे क्यों न चल लूँ, तो फिर सभी ही एक-दूसरे का कन्धा ढूँढने लगेंगे। जो स्वयं कन्धा ढूँढेगा वह दूसरे को कन्धा नहीं दे सकेगा और इस प्रकार सभी पराधीन और आश्रित बनकर जीयेंगे, जो कि सशक्त समाज का परिचायक नहीं होगा। और यदि कोई यह सोचे कि अपने सहारे ही जीना है तो फिर मुझे समाज की या सम्बन्ध की क्या जरूरत है, क्यों न मैं अकेला ही जी लूँ, तो यह भावना भी उसमें स्वार्थ और अहम् पैदा करेगी। यदि वह निर्विकार रहकर जीवन पथ पर बढ़ना चाहता है तो उसे आत्मबल के सहारे आगे बढ़ते हुए अपनी शक्तियों और प्राप्तियों का दूसरों को सहयोग देना है। हर व्यक्ति द्वारा ऐसा किए जाने पर समाज सशक्त बनेगा जिसमें सभी देने वाले और भरपूर होंगे।

स्वनिर्भरता शब्द दो शब्दों (स्व + निर्भरता) से मिलकर बना है। स्व का अर्थ है आत्मा। हमें आत्मा पर अर्थात् श्रेष्ठ विचार-शक्ति पर निर्भर रहना है। कभी धन निर्भरता, सम्बन्ध निर्भरता या शरीर निर्भरता नहीं कहा जाता क्योंकि धन, सम्बन्ध, शरीर आदि सभी विनाशी हैं। परन्तु आत्मा शाश्वत है। उसका बल और सद्‌गुण शाश्वत हैं। उन पर आसरा रखने वाला व्यक्ति सरताज बनता है जबकि धन, सम्बन्ध, शरीर पर आधारित रहने वाला मोहताज हो जाता है। समाज में रहते हुए यह वैचारिक दृढ़ता हर व्यक्ति के लिए ज़रूरी है। विचार की ढ़ता ही कर्म में दृढ़ता पैदा करती है। ढीले विचारों से कर्म ऊँचे नहीं हो सकते। जैसे पानी को उबलने के लिए 100^0 सेंन्टीग्रेड तापमान चाहिए। यदि 99^0 सेन्टीग्रेड तापमान होगा तो भी पानी नहीं उबलेगा। सौर ऊर्जा से भोजन पकाने की विधि भी यही है। सूर्य की ऊर्जा से यदि पानी को केवल कोसा किया जाए या केवल हल्का गर्म किया जाए तो यह कार्य नहीं हो सकता। इसी प्रकार, आत्मनिर्भर बनने के लिए संकल्प में दृढ़ता और निश्चय पूर्ण होना चाहिए। कमज़ोर संकल्पों से कर्म भी कमज़ोर होते हैं और मानव परमुखान्वेषी (दूसरे का मुंह देखने वाला) बना ही रहता है। आत्मनिर्भरता शब्द का पर्यायवाची है स्वावलम्बी बनना, जो पुनः हमारा ध्यान स्व के अवलम्बन की ओर खिंचवाता है। शरीर में विराजमान आत्मा अनन्त ऊर्जा का स्रोत है। **जैसे भौतिक ऊर्जा किसी भी चीज़ का रूपान्तरण सहज ही कर डालती है। इसी प्रकार, आत्मिक ऊर्जा भी किसी भी प्रकार का परिवर्तन सहज ही कर सकती है। हम सभी जानते हैं कि वर्तमान समय सूर्य की ऊर्जा को पहचाना गया तो चमत्कारिक कार्य उससे किए जा रहे हैं। इसी प्रकार, आत्मिक शक्ति हर मानव में है। यदि मानव उसे पहचाने और कार्य में लाए तो असम्भव को सम्भव बना सकता है। जीवन की बाधा रूपी चट्टानों को समाप्त कर सकता है। यह पहचान एकान्त में मन को एकाग्र करने से होती है। स्वयं को स्वयं ही टटोलने से होती है। स्वयं के अस्तित्व को झकझोरने से होती है कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, क्यों आया हूँ?**

जब बच्चा छोटा होता है तब वह दूसरों के सहारे चलता है, यह प्राकृतिक व्यवस्था है परन्तु यदि

बचपन की परिधि लांघने पर भी दूसरों के सहारे चले तो अप्राकृतिक घटना बन जाती है। अवश्य ही यह उसके अक्षम(विकलांग) होने की सूचक बन जाती है। आज के संसार में शारीरिक अंग से अक्षम तो फिर भी गिनती की सीमा में हैं, उसके लिए कोई योजना बन सकती है परन्तु शरीर से स्वस्थ होते हुए भी जिनके विचार कमज़ोर हैं, निर्णय ढीले हैं, उन मानसिक रूप से विकलांग मानवों की संख्या गिनती में नहीं आ पा रही है। वे समाज के लिए बोझ बन रहे हैं। वे अप्रत्यक्ष रूप से पर – निर्भर हैं। वे दुविधाओं से कि क्या करें, क्या न करें, घिरे रहते हैं। संशय के इन नुकीले पत्थरों से कि पता नहीं होगा कि नहीं होगा, पता नहीं सफलता मिलेगी या नहीं, ठोकर खाते रहते हैं। इस मानसिक अक्षमता को मिटाना आज के युग की ज्वलंत आवश्यकता है।

भारत की 70% जनता के सामने आज रोजगार, सुरक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य और स्वशासन का प्रश्न मुँह बाए खड़ा है। सरकार की तरफ से प्रयास किए जाते हैं परन्तु जैसे किसी चीज़ को पकड़ने के लिए हाथ में ताकत चाहिए, इसी प्रकार, किसी भी योजना से लाभ लेने के लिए चाहे वह स्वयंसेवी संस्था की ओर से हो या सरकार की ओर से, मन में ताकत चाहिए। मन की ताकत राजयोग के अभ्यास से निर्मित हो सकती है। जैसे दर्द वाले अंग पर हमें बार-बार दवाई की मालिश करनी पड़ती है, इसी प्रकार, कमज़ोर मन, दु:खी मन, अशान्त और परनिर्भर मन को भी बार-बार स्वमान की स्मृति रूपी मालिश करनी पड़ती है। यह निज स्वरूप और गुण की स्मृति ही राजयोग है। **प्रतिदिन प्रात:काल बिस्तर छोड़ने से पहले मन में स्व के प्रति उमंग और निष्ठा से भरपूर विचारों को बार-बार घुमाइये कि मैं सफल आत्मा हूँ, सफलता मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है, मैं हिम्मतवान आत्मा हूँ, मैं कर्मठ और कुशल हूँ, मेरे संकल्प में पर्वत जैसी दृढ़ता है, दृढ़ता ही मेरा सम्बल है। मुझे इस सम्बल को लेकर असम्भव को सम्भव कर दिखाना है।**

इस प्रकार के विचारों से हम आत्मनिर्भर, स्वनिर्भर, स्वावलम्बी बनने की मजबूत डगर पर चल पडेंगे। हम दूसरों के सहारे चढने वाली बेल न बनकर, दूसरों को सहारा, ठण्डी छाँव और मीठे फल देने वाले वृक्ष समान बन जाएंगे।

आध्यात्मिकता के साथ शिक्षा.......पृष्ठ 16 का शेष

सुगंध हो। शिक्षा उसे ही कहा जाएगा जो नर से श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बना सके। समाज के विभिन्न वर्गों के लिए शिक्षा की नींव निम्न आधारों पर होनी चाहिए। जैसे कि –

- ✦ बालक के लिए समभावना,
- ✦ युवा के लिए रचनात्मक प्रगति,
- ✦ वृद्ध के लिए सहानुभूति और सहृदयता,
- ✦ महिला के लिए एकता,
- ✦ समाज के लिए विवेक और भावना का सन्तुलन,
- ✦ व्यापार के क्षेत्र में रीति-नीति और प्रीति,
- ✦ उद्योग में उन्नति,
- ✦ किसान में पालनकर्ता का भाव।

इस प्रकार, समाज के हर वर्ग के नैतिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक उत्थान की नींव मजबूत करें तो नवयुग निर्माण होने में देर नहीं लगेगी और बापू गाँधीजी के रामराज्य की संकल्पना सार्थक हो जाएगी। ▲

भूल छोटी-छोटी, भार भारी-भारी

ब्रह्माकुमार महेश, आबू पर्वत

जीवन-पथ पर गमन करते-करते मानव कभी उदास, कभी परेशान, कभी उत्साही, कभी सशक्त, कभी मंजिल के अति समीप, कभी मंजिल से गुमराह दिखाई पड़ता है। ऐसा क्यों ? अपने में गौर से झाँक कर देखें तो महसूस होगा कि सहयात्रियों के साथ जाने-अनजाने में हुई छोटी-छोटी भूलें, सूक्ष्म रूप से दिए हुए दु:ख और कुछ सार्वभौमिक नियमों का उल्लंघन करने के कारण ही ऐसा होता है। इस यात्रा के खट्टे-मीठे स्वाद उसे चखने पड़ते हैं।

व्यक्ति से जब भूल हो जाती है तो घर में अथवा समाज में कुछ लोग कहते हैं, ''छोड़ो भई, माफ कर दो उसको, कौन भूल नहीं करता ? मनुष्य तो है ही गलतियों का पुतला।'' इससे उस समय तो वह व्यक्ति भले ही सजा अथवा झगड़े से बच जाता है परन्तु की हुई भूल अथवा गलती का परिणाम नहीं मिट पाता। भूल छोटी हो वा मोटी, उसका परिणाम ज़रूर निकलता ही है। कई पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक कह चुके हैं कि भूल करना मनुष्य का सहज स्वभाव है क्योंकि वह उसकी स्वाभाविक वृत्ति है। आगे चल कर वे यह भी कहते हैं कि भूल करना मानुषता है (To err is human)। इस प्रकार की मनोवैज्ञानकि परिभाषाओं से आज समाज में अपराधिक मनोवृत्ति बढ़ती जा रही है। परन्तु ईश्वरीय ज्ञान यह कहता है कि 'सात्विकता मानव का मूल और सहज स्वभाव है'। 'मानव दैवीगुणों का प्रतिरूप है'। भूल करना दानव का स्वभाव है, तो भला करना मानव का स्वभाव है। व्यक्ति जितनी भूलें करता जाएगा, उतना ही बड़ा वह भूत अथवा दानव बनता जाएगा। जितने दानव बढ़ते जायेंगे, उतने प्रकार से वे परिवार और समाज में अशान्ति, दु:ख, दुष्टता फैलाते जायेंगे।

मनुष्य बुद्धिजीवी है। वह गलत-सही, भूल-भला, अन्याय-न्याय, बुरा-अच्छा, पाप-पुण्य आदि का ज्ञाता है; परमात्मा और कर्म पर विश्वास रखने वाला है। इसलिए उसे अपने को गलती अर्थात् भूलें करने से रोकना चाहिए। प्रवृत्ति वाला हो या निवृत्ति वाला, नेता हो या अभिनेता, स्त्री हो या पुरुष, बच्चा हो या बूढ़ा, प्रजा हो या प्रजा-पति, ज्ञानी हो या योगी - कोई भी हो, गलतियाँ नहीं करनी चाहिएँ। अगर अनजाने में हो भी जाती हैं, तो दुबारा नहीं होने देनी चाहिएँ।

कई बार, पढ़े-लिखे, सन्त-महात्मा भी छोटी-छोटी भूलें कर बैठते हैं। वे समझते हैं कि यह तो बहुत छोटी भूल है, इससे कुछ नहीं होता। यह कोई पाप नहीं है। परन्तु ईश्वरीय नियम कहता है कि भूल छोटी हो या बड़ी, भूल को पाप कहा जाता है। आइये, ऐसी कुछ छोटी-छोटी बातों पर नजर डालें।

कई मंदिरों, मेलों अथवा धार्मिक संस्थाओं और सार्वजनिक स्थलों में जब प्रसाद वितरित किया जाता है तो उसके लिए घण्टों खड़े होकर श्रद्धालु इन्तज़ार करते हैं। प्रसाद का अर्थ है - 'परमात्मा पर चढ़ाई हुई वस्तु'। प्रसाद बहुमूल्य और पवित्र होता है। लेकिन हम देखते हैं कई बार प्रसाद का महत्त्व न जानने के कारण लोग ज़रूरत से ज़्यादा लेते हैं। आधा सेवन कर, आधा फेंक देते हैं। एक बार सेवन कर फिर कल के लिए और लेकर छिपा कर रखते हैं, जो बाद में सड़ जाता है। देखने में यह बहुत छोटी भूल है मगर इसका परिणाम भार चढ़ाने वाला है। सच्चे भक्त तो प्रसाद का एक कण भी मिट्टी में गिर जाए तो उसको उठा कर आँखों पर रखते हैं और भगवान से क्षमा माँग कर स्वीकार करते हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा भी अनाज साफ कराते समय गिरे हुए एक-एक दाने को उठा कर बोरी में डालते थे और बच्चों को समझाते थे, "बच्चे देखो, एक-एक गरीब बच्चे ने अपने पेट पर पट्टी बाँध कर, विश्व सेवा के लिए यह अनाज भेजा है। बच्चे, विनाश के समय एक-एक मुट्ठी अनाज के लिए साहूकार लोग लाखों रुपये देने के लिए तैयार होंगे, फिर भी नहीं मिलेगा इसलिए भगवान के भण्डार का एक दाना भी व्यर्थ नहीं गँवाना।" देखिए, परमात्मा के रथ आदि रचयिता ब्रह्मा ने भी एक-एक दाने को साने की मोहर के बराबर समझा। तो प्रसाद फेंकना कितना बड़ा पाप है, सोचिए जरा!

एक शिवसन्त ने कहा है - अगर तुम भगवन् को अपना बनाना चाहते हो तो इन पाँच बातों को अपने में समाओ - (1) चोरी नहीं करो, (2) झूठ नहीं बोलो, (3) किसी से नफ़रत नहीं करो, (4) खुद की महिमा कभी नहीं करो और (5) किसी का अपमान नहीं करो। यही अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग शुद्धि है।

यहाँ चोरी का अर्थ है किसी वस्तु को उससे सम्बन्धित व्यक्ति से पूछे अथवा बताये बगैर उठा लेना। उदाहरणार्थ, यदि छोटा भाई, बड़े भाई के कमरे से उसकी गैरहाज़री में कलम लेकर चला जाए, तो यह चोरी हुई। कैसे? जब भाई आकर देखेगा, कलम को ढूँढ़ेगा तो न मिलने पर परेशान हो जायेगा। इससे उसके समय, संकल्प, शक्ति आदि खजाने व्यर्थ जायेंगे। अच्छा हो कि संदेश लिखकर छोड़ दें। आपस के विचारों में मेल नहीं होने से एक-दूसरे से दूरी आ जाती है जो बाद में, धीरे-धीरे, नफरत में बदल जाती है। यह भी देखने में छोटी भूल है मगर बहुत बड़ा सूक्ष्म पाप है। इसलिए बाहर से हो अथवा अन्दर से, किसी से भी नफरत नहीं करनी चाहिए।

कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जब भी, जो भी मिले, उनको अपनी ही तारीफ सुनाते रहते हैं, अपने को ही बहुत बड़ा तीर मारने वाला वीर अर्जुन साबित करते रहते हैं। वे जो करते और कहते हैं उसे ठीक समझते हैं और दूसरे वही कार्य करें तो उसे नियम के विरुद्ध मानते हैं। इस प्रकार स्वयं-प्रतिष्ठा को सिद्ध करते रहते हैं। इनको 'मियाँ मिट्ठू' कहते हैं। लेकिन याद रहे उसी वस्तु को सिद्ध किया जाता है जो नहीं है। जो है उसको सिद्ध करने की ज़रूरत नहीं है। अत: अपने को श्रेष्ठ साबित करना यह दिखाता है कि वह सच में श्रेष्ठ नहीं है और दूसरों को कनिष्ठ सिद्ध करने के लिए बार-बार अपने बारे में सुनाते रहते हैं। इस प्रकार, अपनी महिमा का वर्णन करना, सुनाना - यह भी सूक्ष्म भूल है।

कई लोगों की आदत होती है दूसरों का अपमान करना और अपनी होशियारी प्रगट करना। सब के सामने किसी भोले व्यक्ति को जानबूझ कर छेड़ते रहते हैं। इससे शिकार व्यक्ति के दिल को चोट पहुँचती है। अगर सामने वाला समझदार और साधक है तो भले ही अपमान की क्रिया को क्षमा भी कर दे, फिर भी दूसरों को अपमानित कर व्यक्ति ईश्वरीय नियम का उल्लंघन कर, विकर्म तो कर ही बैठता है।

इस प्रकार भूलों में भटकने वाले व्यक्ति का मन परमात्मा में एकाग्र नहीं होता, दिव्य अनुभूतियाँ उसे नहीं होतीं। ध्यान में अनुभूतियाँ न होने के कारण जीवन में सुख-शान्ति-सन्तोष की प्राप्ति नहीं होती। भविष्य अस्पष्ट दिखाई देने लगता है और वह त्याग से भोग की ओर आकर्षित होने लगता है। भोग उसे बिल्कुल खोखला कर देता है। इस स्थिति से बचने के लिए ऐसी छोटी-छोटी भूलों को सूक्ष्म रूप से भी जानें और उनको त्यागें।

अबके और तबके

ब्रह्माकुमार विजय, बीकानेर

सृष्टि रंगमंच कर्मप्रधान है। हर रंगकर्मी के साथ, कर्म करना और फल प्राप्त करना अविनाशी रूप से जुड़ा हुआ है। जब कोई आत्मिक स्थिति में स्थिति होकर, कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण रख कर, सर्व के लिए सुखदाई कर्म करता है तो कर्म सुकर्म बन जाते हैं। इनके फलस्वरूप उसे स्वस्थ काया, धन, सुखदाई सम्बन्ध और पवित्र मन की प्राप्ति होती है। आज के संसार में व्यक्ति और व्यक्ति के बीच जो भिन्नता है वह कर्मों द्वारा प्राप्त जमा पूँजी के आधार पर ही है। हम देखते हैं कि एक बालक तो जन्म लेते ही सोने के चम्मच से दूध पीता है और दूसरे को पोखर का पानी भी नसीब नहीं हो पाता। इसका कारण मानव द्वारा जमा किया पुण्य या पाप का खाता ही होता है। कई लोग कहते हैं कि वर्तमान समय, पाप करने वाले तो सुखी और पुण्य करने वाले दुःखी हैं। वास्तव में ऐसा सोचना भ्रम है। एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि इस समय पूर्ण शुद्ध कोई भी आत्मा नहीं है। अच्छाई और बुराई का मिश्रण सभी में है। हाँ, यह हो सकता है कि एक में यह अनुपात 99 और 1 और दूसरे में 1 और 99 हो। जिनका पूर्व का पुण्य का खाता जमा है, उसके फलस्वरूप वे सांसारिक सुख पाते हैं परन्तु यदि पुण्य कर्मों से वे इसे आगे नहीं बढ़ाते तो कालान्तर में उन सुखों से वंचित भी हो जाते हैं। पुण्य जमा करने का आधार है आत्म-अभिमानी स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की श्रीमत अनुसार कर्म करना। इसके विपरीत यदि देह-अभिमान के वश हो काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों के वश होकर बुरी आदतों को पाला जाए तो पाप का खाता बढ़ जाता है। कर्मों के आधार पर ही कोई देवात्मा, पुण्यात्मा, महात्मा, पापात्मा आदि कहलाते हैं। कर्मों की पूँजी अविनाशी होती है जो मानव की सदा सहायक बन कर रहती है। समझदार मानव परिस्थितियाँ आने पर भी श्रेष्ठ कर्म को अक्षुण्ण बनाए रखता है और धैर्य के साथ सुमार्ग पर बढ़ता जाता है। कर्मों के फल के सम्बन्ध में एक सुन्दर कहानी यहाँ प्रासंगिक है।

एक बार एक राजा ने अपने दरबारियों को कहा कि मुझे दो अबके और दो तबके लाकर दो। और दो ऐसे लाकर दो जो न अबके हों और न तबके। दरबारी हैरत में पड़ गए। उन्हें राजा की बात का कोई ओर-छोर समझ में नहीं आया। तभी बुद्धिमान मन्त्री का दरबार में आना हुआ। सभी को मौन अवस्था में देख उसने इसका कारण पूछा। राजा ने कारण बाताते हुए वही प्रश्न मन्त्री जी से भी पूछ लिया। मन्त्री जी ने अगले दिन, राजा की कही हुई

सपने सच हो जायेंगे

– ब्र.कु. बरखा, गुमला (झारखण्ड)

हमें न रोको ए जग वालो, हमें तो आगे बढ़ना है।
जीवन की सुन्दर बगिया का, ख्वाब हमें तो गढ़ना है।।
माना उम्र अभी है छोटी, काम कठिन है, नहीं आसान।
अपने दिल में भी लेकिन, मचल रहा है एक अरमान।।
हमें बनानी ऐसी दुनिया, जहाँ उमड़ता प्यार है।
शेर, गाय और मानव जहाँ, करते साथ विहार हैं।।
जिस दिन इस पावन धरती से,
हिंसा-कलह मिट जाएँगे।
उस दिन ही से ख्वाब हमारे, सारे सच हो जायेंगे।
जीवन-पुष्प समर्पित कर हम, 'स्वर्ग' सुहाना लायेंगे।

चीजें लाकर देने का वायदा कर वहाँ से प्रस्थान किया। अगले दिन जब दरबार लगा तो मन्त्री जी अपने साथ 6 लोगों को लिए हुए, खुशी में झूमते हुए वहाँ उपस्थित हुए और दो राजाओं को, जो उसके साथ आए थे, राजा के सामने खड़ा कर दिया और कहा कि ये दो अबके हैं। इन्होंने पूर्वजन्म में धन दान किया, उसके फलस्वरूप अब राजाई का सुख भोग रहे हैं। उसके बाद उसने दो योगियों को राजा के सामने खड़ा किया और कहा कि ये दो तबके हैं अर्थात् 'तपोराज' की कहावत के अनुसार आज तप कर रहे हैं और भविष्य में तपस्या का फल राजाई पद प्राप्त करने वाले हैं। इसके बाद दो साधारण गृहस्थियों को राजा के सामने खड़ा किया और कहा कि ये इस जन्म में हर पल रोटी, कपड़े, बच्चे, सम्बन्ध आदि के मोह में फँसे रह कर आजीविका का कठिनाई से प्रबन्ध कर पाते हैं और उसी में सारा समय लगा देते हैं। इनको परमात्मा के समीप जाने की और पुण्य कर्म करने की कोई रुचि नहीं है। ये इस जन्म में भी कष्टों का सामना कर रहे हैं और अगले जन्म में भी इसी प्रकार की परिस्थितियों का सामना इन्हें करना पड़ेगा। इसलिए ये न अबके हैं और न तबके हैं। राजा, मन्त्री की इन बुद्धिमानी भरी बातों से बहुत प्रसन्न हुआ और इनाम देकर उसे सम्मानित किया।

प्यारा शिव बाबा हमें प्रतिदिन दैवीगुण धारण करने, आत्माभिमानी, निरअहंकारी, सच्चा, पवित्र, और कर्मकुशल बनने की शिक्षा देते हैं। यदि हम मन लगा कर उन शिक्षाओं को धारण करेंगे तो अबके और तबके दोनों ही बन जाएँगे अर्थात् संगमयुग पर भी अतीन्द्रिय आनन्द से भरपूर रहेंगे और भविष्य में भी जीवनमुक्त बादशाही का सुख भोगेंगे। ✤

ज्ञान-दोहे

— आचार्य कंचन, अढतियान स्ट्रीट, फर्रुखाबाद

सुख या दुःख जो भी मिले, मिले जीत या हार।
दृश्य समझ नाटक का, करो उसे स्वीकार।।
मात्र प्यार है जगत और जीवन का आधार।
भ्राता-भगिनि ही मान कर, करो सभी से प्यार।।
खींचो नहीं कमान को, ना तानो तलवार।
सम्मुख हो बैरी अगर, करो प्यार से वार।।
घृणा-द्वेष-विष पी रही है शिव की संतान।
इस कारण ही खो गई है उसकी पहचान।।
राम-राज्य का जागरण यदि जग में हो जाय।
रावणत्व का भय नहीं किंचित रहने पाय।।
जैसे प्रभु कहते हैं - नारी-शक्ति अपार।
वैसे ही व्यवहार में दो उसको अधिकार।।
मकड़-जाल में है फँसा लगभग हर इंसान।
कारण केवल एक है - भरा है तन-अभिमान।।
देह-भान से उपजते काम-क्रोध-से विकार।
बिन त्यागे जिनको न हो भव वैतरणी पार।।
प्रथम कमाते मूर्ख जन, दौलत बेतादाद।
फिर व्यय करने में करें, जीवन को बरबाद।।
देह-दम्भ तज विनत हो, सब कुछ शिव पर वार।
क्योंकि दम्भ ही है सभी संघर्षों का द्वार।।
सुखमय हो संसार और घर-घर मंगलाचार।
परम ज्योति के ध्यान से, करो दृष्टि विस्तार।।
देखो, परखो जगत को लेकिन सहित विवेक।
बिन विवेक जाये नहीं दम्भ-मोह-अतिरेक।।
कर्त्तापन की भावना से उपजे अभिमान।
अभिमानी से दूर अति रहते शिव भगवान।।

तुरन्त दान महापुण्य

ब्रह्माकुमार उमाकांत, अमरावती

तुरन्त दान महापुण्य – यह एक प्रसिद्ध कहावत है। इसका अर्थ है कि अच्छा संकल्प मन में उत्पन्न होते ही उसे तुरन्त कर्म में लाना चाहिए। भारत के धार्मिक समाज में इस कहावत का अर्थ, धन के दान से लगाया जाता है। महाभारत आख्यान के एक पात्र दानवीर कर्ण की दानप्रियता से जुड़ी एक घटना भी इस सम्बन्ध में सुनाई जाती है। घटना इस प्रकार है कि एक बार दानवीर राजा कर्ण खाना खा रहे थे। एक याचक कुछ लेने आया। राजा कर्ण का दाहिना हाथ भोजन की थाली में था, इसलिए उसने पास में ढक कर रखी गई थाली से कुछ हीरे-जवाहरात और स्वर्ण मोहरें बाएँ हाथ से उठा कर याचक को दे दिये। याचक प्रसन्नतापूर्वक चला गया, पर पास खड़े सेवकों ने प्रश्न उठाया कि दान हमेशा दाएँ हाथ से देना चाहिए, यह जानते हुए भी राजा साहब ने बाएँ हाथ से क्यों दिया। इस पर दानवीर कर्ण ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया कि क्या पता दाहिना हाथ धुलाई करूँ, केवल इतने समय में ही मेरा संकल्प बदल जाए और याचक निराश हो जाए। कौन-सा हाथ है, यह देखने के बजाए संकल्प की तुरन्त सिद्धि अधिक ज़रूरी है।

उपरोक्त घटना में धन के दान की बात कही गई है परन्तु इस दान से भी बड़े कई दान और हैं जिनकी वर्तमान समाज को बहुत आवश्यकता है। जैसे कि –

1. समय का दान - किसी अच्छे कार्य को करने के लिए, सीखने के लिए समय का दान जरूरी है। यदि संकल्प आते ही समय न लगाया जाए तो कल-कल करते काल आ जाता है और मनुष्य उस अच्छी बात से वंचित हो जाता है।

2. बुराइयों का दान - वर्तमान संगमयुग पर भगवान सृष्टि पर अवतरित होकर मानव से काम-क्रोध-लोभ इत्यादि विकारों का दान माँग रहे हैं। यदि भगवान के आह्वान को अनसुना करके, इन विकारों को छोड़ने में आजकल-आजकल करते रहेंगे तो भगवान सतयुगी बादशाही देकर चले जाएँगे और मानव पश्चाताप में हाथ मलते रह जाएँगे।

3. शुभ-भावनाओं का दान- वर्तमान विश्व में दुःख, अशान्ति की आपातकालीन परिस्थितियाँ चारों ओर मंडरा रही हैं। ऐसे समय में सर्व के प्रति शुभ संकल्पों का दान, रहम का दान, दुआओं का दान बहुत बड़ी सेवा है।

तुरन्त करने पर ही कोई दान महापुण्य बनता है। सोच-सोच कर, टाल-मटूल करके जो शुभ कार्य किया जाता है वह महापुण्य नहीं केवल पुण्य ही रह जाता है। इसलिए प्रतिदिन प्रत्येक आत्मा को दुआओं का दान देना भी सर्वोत्तम दान है। यह तभी हो पाएगा जब हम मनचले न बन कर प्रभु-चेले बनेंगे अर्थात् मन का अनुसरण न करके प्रभु का अनुसरण करेंगे।

हाथरस- पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 35वें अव्यक्ति स्मृति दिवस पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित हैं उ.प्र.के पूर्व ऊर्जा मंत्री रामवीर उपाध्याय, ज़िला परिषद अध्यक्षा बहन सीमा उपाध्याय, ब्र.कु. भावना बहन, प्रधानाचार्या बहन ऊषा गुप्ता, ब्र.कु. सीता बहन, भ्रष्टाचार उन्मूलन अध्यक्ष भ्राता अख्तर बाबू, शायर भ्राता नूरमुहम्मद एवं अन्य ।

गतांक से आगे –

वैज्ञानिक शोध – आत्मा, पुनर्जन्म और मृत्यु

ब्रह्माकुमारी हंसा रावल, अमेरिका

पिछले लेख में हमने कई ऐसे अनुभव जाने कि आत्मा किस प्रकार शरीर छोड़ने के बाद परमात्मा से मिलती है। मरकर भगवान से मिलना और जीते जी भगवान से मिलना इसमें अन्तर है। शरीर छोड़ने पर थोड़ी देर के लिए ईश्वरीय समीपता का अनुभव होता है परन्तु पुनर्जन्म लेते ही पुराने संस्कार पुन: प्रकट होने लगते हैं लेकिन जीते जी, पुराने संस्कारों से मरकर, भगवान की गोदी में नया जीवन पाने से, धीरे-धीरे हमारे पुराने संस्कार समाप्त होते जाते हैं और सतयुगी दुनिया के पहले जन्म में हम सतोप्रधान संस्कारों के साथ जन्मते हैं।

एक बार नैरोबी में, पुनर्जन्म से सम्बन्धित मेरे प्रवचन के बाद एक खूबसूरत लड़की, जिसने सफेद परिधान पहना था, मेरे पास आई। मुझे भ्रम हुआ कि शायद यह कोई ब्रह्माकुमारी बहन है परन्तु उसने मुझे एक नया, विचित्र पर बिल्कुल सत्य अनुभव सुनाया। वह अखबार की कतरनें भी, प्रमाण रूप में साथ लेकर आई थी। उसने कहा - ''कुछ वर्ष पूर्व मेरी शादी हुई। जेठानी को मेरी खूबसूरती, विवेक और व्यापारिक समझ से ईर्ष्या हो गई, हम दोनों में अनबन रहने लगी। मेरे भोलेपन का फायदा उठा एक दिन जेठानी मुझे क्षमा-पर्व पर जैन मन्दिर ले गई। उसका कहना था कि आज के दिन हम दोनों एक-दो की गलतियों को माफ कर बहन बन जाएँगी परन्तु रास्ते में ही, पूर्व योजना के अनुसार, जेठानी गाड़ी से उतर गई और चालक मुझ अकेली को दूर एक नदी के पास छोड़ कर भाग गया। वहाँ चार काले लोग कुल्हाड़ी लिए आए। मैं (आत्मा) समझ गई कि ये मुझे मार डालेंगे इसलिए पहले वार में ही मैं शरीर से निकल गई। मैंने (आत्मा ने) ऊपर से देखा कि मेरा शरीर गिर गया है। उन्होंने हाथ-पैर बाँधे और शरीर को मृत समझ नदी में फेंक दिया। मुझे तुरन्त महावीर स्वामी दिखाई दिए (उसने महावीर स्वामी का जो चित्रण किया वह ब्रह्मा बाबा से मिलता-जुलता था) जिनके पीछे एक चमकती लाइट थी। वह बोले - ''बच्ची, आप परेशान नहीं हों, आप बच जाएँगी, आपको कुछ होने वाला नहीं है।'' शरीर से निकलते ही मुझे जेठानी की सारी विकृत योजना और इसको सफल बनाने के लिए दिए गए धन के बारे में भी जानकारी हो गई थी। मैंने देखा कि पानी में पड़ते ही मेरे शरीर के हाथ-पाँव खुल गए थे और सारा शरीर रक्त से सना था। उस लाइट ने तथा उसके इन शब्दों ने कि 'तुझे कुछ होने वाला नहीं है' मुझे बहुत शक्ति प्रदान की। मैं दौड़कर शरीर में प्रवेश कर गई, किसी ने देखा और मुझे मदद की। फिर मुझे हॉस्पिटल में रखा गया। पुलिस, पत्रकार सब के पास बात पहुँच गई। मेरे पति को बहुत क्रोध आ रहा था, उसने कहा कि अब हम अलग हो जाएँगे, मैं केस करूँगा और इसे (जेठानी को) कारावास में डलवाऊँगा। पर मैंने ऐसा नहीं होने दिया। मैंने पति को बताया कि महावीर ने तथा उस लाइट ने मुझे बोला था कि उसे माफ कर देना, मैंने वचन दिया है इसलिए मैं उसे निभाऊँगी, आपको अलग रहना है तो रहो, मैं तो इसके साथ ही रहूँगी, माफ कर दूँगी, बदला नहीं लूँगी। मैं हॉस्पिटल में दो-तीन मास रही, कई प्रकार की सर्जरी हुई परन्तु भगवान ने मुझे इतनी शक्ति दी, हम दोनों अब बहन बन

गईं हैं और हमारा परिवार बहुत सुखी है। आप जिस प्यारे परमात्मा के बारे में प्रवचन कर रहे हो, उनके बहुत आशीर्वाद मेरे साथ हैं।'' बहन का यह सत्य पर विचित्र अनुभव सुन मुझे ईश्वर पिता की अगाध शक्ति का अहसास हुआ कि उसके आशीर्वादों में कितनी ताकत है जो इस बहन को रिंचक भी बदले का ख्याल नहीं आया।

मृत्यु से निकटता के अनुभव अब कोई नई बात नहीं रही है। इलाज के दौरान शरीर छोड़ने और पुन: जीवित होने का एक अन्य रोमांचक मामला शोध कार्य के दौरान हमारे सामने आया और इसने भी कई रहस्यों पर से पर्दा उठाया। टैक्सास में एक व्यापारी को हृदयाघात हुआ, वह कैलिफोर्निया का रहने वाला था। उसको आपातकालीन-कक्ष में भर्ती किया गया। डॉक्टर्स ने उसे जिन्दा करने के लिए बहुत प्रयास किए परन्तु आधे घन्टे बाद उसे मृत घोषित कर दिया गया। जब उसे कार में डालकर मुर्दाघर की ओर ले जाने लगे तो वह रास्ते में ही जिन्दा हो गया और बोला कि मुझे कहाँ ले जा रहे हो। ले जाने वाले एकदम घबरा गए कि मुर्दा व्यक्ति एक घन्टे बाद कैसे बोल रहा है! फिर उसे गहन चिकित्सा-कक्ष में दवा देकर सुला दिया गया। जागने पर उसने चिकित्सा विज्ञान के एक विद्यार्थी को इशारे से बुलाया और कहा - ''मुझे बातें करनी हैं।'' विद्यार्थी ने उसे बोलने से मना किया परन्तु उसने पुन: आग्रह किया और फिर सारी घटना का वर्णन किया कि कैसे मुझे शरीर में दर्द हुआ, मैंने एक सफेद सितारे के रूप में शरीर को छोड़ दिया और कैसे मैं बाहर से देख रहा था कि मुझे कहाँ-कहाँ ले गए, क्या-क्या किया। बाद में, मुझे लगा कि शरीर बचने वाला नहीं है तो मैं एक सेकेण्ड में 5000 मील दूर कैलिफोर्निया भागा। मैंने अपनी पत्नी को एक होटल में देखा, मैंने उसे कहा कि मैं मर रहा हूँ परन्तु वह मेरी बात सुन नहीं रही थी, और ही माँ से बातें किए जा रही थी। उसी समय, मैंने सुना कि नर्स मुझे मुर्दाघर भेजने के लिए कह रही है, तो मैं वहाँ से भागा और पुन: शरीर में घुस गया। इन बातों को सुन जब विद्यार्थी खूब हँसा तो व्यापारी ने पूछा कि क्या आपको मैं पागल लग रहा हूँ, कभी-कभी दिमाग में खून न पहुँचने पर व्यक्ति कुछ-कुछ बोलने लगता है। व्यापारी ने उसी समय एक सूची दी जिसमें उसके शरीर को बचाने के लिए दी गई दवाइयों के नाम और मात्रा क्रमवार लिखी थी। विद्यार्थी ने पूछा - ''क्या आप डॉक्टर हैं?'' व्यापारी ने कहा - ''मैं व्यापारी हूँ और पढ़ा लिखा नहीं हूँ।'' विद्यार्थी ने कहा - ''जो दवाइयाँ आपने लिखी हैं इनकी जानकारी तो मुझे भी नहीं है।'' व्यापारी ने कहा - ''मैं जो कह रहा हूँ, सत्य है और मेरे हृदय में क्या तकलीफ है, सब मैंने ऊपर से देखा है।'' विद्यार्थी ने पूछा - ''क्या तकलीफ है?'' व्यापारी ने कहा - ''बड़े डॉक्टर को बुलाओ क्योंकि आप इन बातों को समझ नहीं सकेंगे।'' विद्यार्थी ने कहा - ''आप बोलो, मैं लिखकर डॉक्टर को दिखा दूँगा।'' व्यापारी ने कहा - ''मेरी एक रक्तवाहिका अवरुद्ध हुई है जिसके कारण हृदयाघात हुआ है।''

व्यापारी के कहने पर विद्यार्थी ने कैलिफोर्निया स्थित उस होटल में फोन किया जहाँ 3 घण्टे पहले उसकी पत्नी थी। फोन किया तो वह वहीं मिली। उसके कपड़ों के बारे में पूछा तो वे वैसे ही थे जैसे कि व्यापारी ने वर्णन किए थे। व्यापारी द्वारा दवाइयों की तथा कैलिफोर्निया की सही जानकारी देने से यह सिद्ध हो गया कि सचमुच शरीर से भिन्न कोई सत्ता है जिसे हम सोल (Soul), आत्मा, रूह या अन्य-अन्य नामों से भी जानते हैं। इसके अलावा शरीर से निकलते ही आत्मा में शक्ति आ जाती है, उसे यह अहसास हो जाता है कि शरीर अलग है और मैं आत्मा अलग हूँ। आत्मा आँख बिना देख सकती है, कान बिना सुन सकती है परन्तु बोल नहीं सकती। शरीर के अन्दर का भी देख सकती है, दूर-दूर का भी सुन सकती है। आत्मा

की ये सब शक्तियाँ देह अभिमान के आवरण में दबी रहती हैं। राजयोग के अभ्यास में अशरीरी स्थिति के अनुभव से भी आत्मा की ये शक्तियाँ कार्य करने लगती हैं। मृत्यु के बाद 98% लोगों को ऊपर जाकर बहुत अनोखा अनुभव हुआ है। कई मरीज हमें बताते हैं कि उस तेजोमय सफेद लाइट ने माँ-बाप का इतना प्यार दिया कि हम निहाल हो गए, खो गए उस प्यार में, भूल गए सब कुछ, जब हम कहते थे कि हमको वापस नहीं जाना तो मीठी-मीठी बातें करके कि आपको यह करना है, वह करना है, वह लाइट हमें वापस भेज देती है। ऐसा एक का नहीं, लाखों का अनुभव है। अनुभव बताने वाले उसे लाइट ही कहते हैं - भगवान या गॉड नहीं कहते। वैज्ञानिक यह भी बताते हैं कि गलती होने पर, आत्मा के साथ मीठी-मीठी बातें करके कि आगे से यह करना, यह नहीं करना, - वह प्रकाश पुञ्ज वापस भेज देते हैं। इससे मरने का भय समाप्त हो जाता है।

जब मैं सान एण्टोनियो में थी तो इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नए-नए सम्पर्क में आई हुई एक बहन अपनी बहन को, जो बीमार थी, मेरे पास लाई और कहा कि इससे कुछ बातें करो। मैंने कहा - यह बीमार है, इसे हॉस्पिटल में ले जाओ। उसने कहा - ''मैं इसे हॉस्पिटल से ही लाई हूँ, यह अन्तिम साँसों पर है, मैं आपसे बात करवाना चाहती हूँ।'' मैंने देखा कि रोगी बहन जब साँस ले रही थी तो बदबू आती थी, मैं समझ गई कि इसके फेफड़ों में पस भरा है, फेफड़े का कैन्सर भी हो सकता है। बीमार बहन बहुत दु:खी थी, मुझसे नज़रें मिलाने का साहस नहीं कर पा रही थी, फिर भी मुझे ईश्वरीय ज्ञान से सान्त्वना तो देनी ही थी इसलिए मैंने कहा - ''शरीर तो कष्ट में है परन्तु इसके अन्दर एक बहुत सुन्दर आत्मा है, उसको कैन्सर नहीं है। यह शरीर आत्मा को बहुत दु:ख देता है, मैंने आत्मा पर शोध किया है, उस अनुसार मैं जानती हूँ कि ''जब हम जन्म लेते हैं तो अन्य कोई पास हो या न हो, माँ तो होती ही है, जब हम शरीर छोड़ते हैं तब भी हमारे मात-पिता (परमात्मा) हमें लेने के लिए खड़े होते हैं।'' मेरी इन बातों को सुनकर बीमार बहन ने मुझे देखा, उसमें विश्वास जागा। मैंने उसे ही कहा - ''यह शरीर आपको बहुत दु:ख दे रहा है, अब इसमें रहने की जरूरत नहीं है, आप आत्मा सुन्दर और स्वस्थ हो, इस शरीर को छोड़ते समय डरना मत, मृत्यु के बाद बहुत सुन्दर सफेद-सफेद लाइट आपको गोद में ले लेगी, शरीर से मोह भी मत करना, नफरत भी नहीं करना, शान्ति से इसे अलविदा कहना।'' इसके बाद दोनों बहनें हॉस्पिटल चली गई। करीब 12 बजे छोटी बहन ने मुझे फोन पर बताया - ''अन्तिम श्वासों के समय मेरी बड़ी बहन ने मेरा हाथ पकड़ा और सामने देखती हुई बोली कि मुझे शान्ति और प्रेम का अनुभव हो रहा है, इस कोने से लाइट मुझे बुला रही है, मैं जाती हूँ, मुझे छुट्टी दे दो, डॉक्टर बहन को कहना कि मैं उससे फिर मिलूँगी, उसने जो कुछ बोला था वह सच है, मैं बिल्कुल आनन्द में हूँ। ऐसा कहते-कहते उसकी पकड़ ढीली हो गई और आत्मा उड़ गई।'' इस अनुभव से मुझे यह सीखने को मिला कि मरने के थोड़े समय पहले या उसके बाद आत्मा शान्ति का अनुभव करती है।

प्यारे बाबा ने सतयुग के बारे में बताया है कि वहाँ सभी स्वाभाविक रीति से आत्माभिमानी होते हैं। इस स्थिति में छठी इन्द्रिय कार्य करती है इसलिए सतयुग में विचारों के आदान-प्रदान में कोई बाधा नहीं आएगी। वहाँ दूरदर्शन, दूरभाष आदि की भी जरूरत नहीं रहेगी। आजकल विदेशों में जानवरों पर बहुत प्रयोग हो रहे हैं, जिनकी जानकारी हमें आत्मा की शक्तियों के बारे में काफी अनुभव प्रदान करती है। जानवर भगवान को नहीं जानते परन्तु उनमें देह-भान भी नहीं होता। उन्हें स्वाभाविक पता होता है कि इस शरीर को छोड़कर दूसरा लेना है इसलिए वे शान्ति से मरते हैं। विदेश में तो मानव के मित्र कुत्ता, बिल्ली आदि ही होते हैं। आजकल जानवरों के भी मनोवैज्ञानिक निकले

हैं जो मृत जानवर का चित्र देखकर उसकी सारी जीवन कहानी सुना देते हैं। जीवित जानवर के व्यवहार की भी सारी बातें बता देते हैं। एक व्यक्ति अपनी पत्नी से बहुत दु:खी था। एक दिन उसने एक मादा मगरमच्छ को देखा, उसे माँस खिलाया और सब मन का हाल उसे सुना दिया। दोनों की मुलाकात का सिलसिला चलता रहा। कुछ दिन बाद मगरमच्छ ने आना छोड़ दिया। इस व्यक्ति ने मनोवैज्ञानिक को बुलवाया कि आप कारण की जाँच करो। मनोवैज्ञानिक ने उस मगरमच्छ को बुलवाया और न आने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि पहले तो यह बढ़िया माँस खिलाता था, अब घटिया खिलाता है। मैं उसकी बीवी की सब बातें सुनती हूँ, इसको आराम मिलता है तो मुझे बढ़िया माँस खिलाना चाहिए ना। मनोवैज्ञानिक ने उस आदमी से पूछा कि क्या ऐसा मनमुटाव आपके घर में चलता है, तो आदमी ने स्वीकार किया और साथ ही घटिया माँस देने वाली बात भी स्वीकार की। फिर उस व्यक्ति ने दोस्ती बनाए रखने के लिए मगरमच्छ को बढ़िया माँस लाकर दिया। आजकल कुत्ते को चोर लोग मार डालते हैं। कुत्ते का फोटो जब मनोविज्ञानी को दिखाते हैं तो वह उसकी आत्मा का आह्वान करता है और आत्मा आकर बता देती है कि चोर ऐसा-ऐसा है। इस आधार पर पुलिस चोर को पकड़ लेती है। ये सब बातें हमें सिखाती हैं कि आत्मा में बहुत शक्ति है। हम उस शक्ति का क्यों नहीं सदुपयोग कर पाते क्योंकि शरीर से नष्टोमोहा नहीं हैं। जब हम नष्टोमोहा बनेंगे तभी कर्मेन्द्रियों को जीत सकेंगे। जब तक शरीर में मोह है तब तक सगे-सम्बन्धियों में मोह होगा। इस मोह के कारण आत्मिक शक्ति क्षीण हो गई है। पिछले 2500 वर्षों से आत्मिक शक्ति कम होती आ रही है और अब यह जानवरों से भी कम हो गई है इसलिए प्यारे शिव बाबा बार-बार शिक्षा देते हैं - ''बच्चे, आत्मभिमानी बनो, इस स्थिति में ही सर्व शक्तियों का जागरण होगा।''

❖❖❖

आध्यात्मिकता

आध्यात्मिकता अपनी ज़िम्मेवारियों का सन्तुलन बनाए रखने की कला है। ये ज़िम्मेवारियाँ हैं – स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति व सारे विश्व के प्रति। इस सन्तुलन बनाए रखने की कला का आधार है स्वयं की, परमात्मा की व कर्मों के नियम की गहरी समझ।

आत्म-ज्ञान होने से आपको भौतिक तत्वों व उनकी सीमाओं से अनासक्त रहने की शक्ति प्राप्त होती है। परमात्मा को जान लेने पर आप सर्वगुणों के स्रोत से गहरा, प्रेमपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लेते हो तथा उस स्रोत से सारी विशेषताएं, गुण और शक्तियाँ स्वयं में ग्रहण कर लेते हो। कर्मों के गुह्य ज्ञान को समझने से आपको पुराने हिसाब चुकाने और वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करने के लिए प्रेरणा मिलती है।

शारीरिक अस्वस्थता, कमज़ोर मानसिक स्थिति, धन का अभाव और सम्बन्धों में कटुता का शिकार कोई भी व्यक्ति हो सकता है। मानव जीवन इन चार बातों – तन, मन, धन व जन पर आधारित है, फ़िर भी आज ये सभी अति क्षणभंगुर व अविश्वसनीय हैं। परमात्म-बल से सहनशक्ति बढ़ती है और किसी भी प्रकार की परिस्थिति का सामना करने की क्षमता आती है। कर्मों की गहन गति को जानने से यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार हमारे श्रेष्ठ विचार, शुद्ध भावनाएं और अच्छे कर्म, हमारी और सारे विश्व की सर्व समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

– दादी जानकी जी

महिला सशक्तिकरण

– ब्रह्माकुमारी छाया, मुलुण्ड

समाज में अनेक प्रकार के सशक्तिकरण जैसे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समय-समय पर होते रहे हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए भारत सरकार ने सन् 2001 को विशेष वर्ष घोषित किया था। सशक्तिकरण का अर्थ है श्रेष्ठ शक्ति का प्रवाह जीवन में उतरना। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी पद्मावती आदि ऐसी ही सशक्त नारियाँ थीं। वैदिककाल की प्रसिद्ध गार्गी तथा मैयेत्री ने अपनी पवित्रता के बल से वेदों को जनजीवन में जागृत किया था। उस समय आज की तरह योजनायें नहीं थीं परन्तु जीवन श्रेष्ठ योग्यताओं से सम्पन्न था।

सशक्तिकरण तब हो जब श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प कर्म में उतर आयें। जब तक जीवन शक्तिशाली नहीं तब तक कोई भी सशक्तिकरण साध्य नहीं हो सकता। जैसे खाना खाने के बाद यदि वह हज़म नहीं होगा तो शरीर में शक्ति नहीं आयेगी, उसी प्रकार श्रेष्ठ विचारों के कर्म में साकार होने पर ही समाज में परिवर्तन होता है। हम दृष्टिपात करें कि सरकार की तरफ से स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधायें प्राप्त होने के बावजूद भी क्या नारी सही अर्थों में सशक्त बन पाई है?

मान लीजिये, शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त हो गया पर व्यर्थ संकल्पों की गति तीव्र होने से मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ कर तनाव को जन्म देता है। तनावजनित अनेक बीमारियाँ लग जाती हैं, आत्म-हत्या तक की नौबत आ जाती है। सुरक्षा के नाम पर अनेक प्रकार के कानून बनाये जाने पर भी वह पग-पग पर असुरक्षित है। **वास्तव में, मूल्य आधारित जीवन ही उसकी सुरक्षा का आधार है। श्रेष्ठ और उच्च विचार शक्ति ही आसुरी व्यवहार को जीत सकती है। जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं का कारण हैं कामनायें, अशुद्ध इच्छायें तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार। इनका समाधान सात गुणों में है, जो हैं – ज्ञान, पवित्रता, प्रेम, शान्ति, सुख, आनन्द और शक्ति। इन गुणों की प्राप्ति आध्यात्मिकता से होती है। आध्यात्मिकता का अर्थ है खुद का** अध्ययन करना कि मैं आत्मा इन सात गुणों का स्वरूप हूँ।

भौतिकवादी दृष्टिकोण द्वारा जो भी कार्य होते हैं वे बहुधा समाज को पतन की ओर ही ले जाते हैं। आज नारी को शिक्षा का खुला क्षेत्र प्राप्त है, वह आत्मनिर्भर भी हुई है, बाहरी संसार से भी उसका परिचय हुआ है, सामाजिक संस्थाओं में उसे अग्रणी स्थान मिलने लगा है परन्तु इन सबके बावजूद वह घर के वातावरण को समर्थ नहीं बना पा रही है। घर के कोने उससे दूर होते जा रहे हैं। इसका कारण है साधनों का आकर्षण, जो व्यक्ति को व्यक्ति से दूर करता है। जब तक आत्म-संयम और आत्म-नियंत्रण प्रदान करने वाली शिक्षा जीवन में न आये तब तक वह प्रगति के असली शिखर पर नहीं चढ़ सकती।

प्राचीनकाल से अर्वाचीन तक नारी की महिमा में बहुत कुछ कहा गया है परन्तु वर्तमान समय उसे कहने तक सीमित न रख कर कर्म में उतारने लग जाना है क्योंकि स्वयं विश्व पिता परमात्मा नारी का स्थान देवी के रूप में देखना चाहते हैं। वे उसे शक्ति स्वरूपा बना कर इस सम्पूर्ण नर्कमय सृष्टि को पावन बनाना चाहते हैं।

संस्कारों के काँटे

शरीर में चुभे काँटों की तरह आत्मा में चुभे हुए पतित, गन्दे संस्कारों के काँटे भी दु:ख देते हैं, इन्हें निकाल फेंको।

1. शान्तिवन (आबू रोड)- अखिल भारतीय ग्राम विकास अभियान को शिवध्वज दिखाकर रवाना करती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी। साथ में हैं ब्र.कु. मुन्नी बहन, आबू रोड नगरपालिकाध्यक्षा बहन संतोष राठौर, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. भरत भाई, ब्र.कु. मोहन भाई, ब्र.कु. भोपाल भाई तथा अन्य। 2. देहली (हरिनगर)- रेलवे सुरक्षा बल के जवानों को स्व-प्रबन्धन नेतृत्व कोर्स कराने के बाद ब्र.कु. आशा बहन तथा ब्र.कु. भाग्य बहन उनके साथ ग्रुप फोटो में। 3. सिरसा (शान्ति सरोवर)- सरपंचगण, राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी को मोमेन्टो भेंट करते हुए। साथ में हैं बहन जसमीत सिंह जी, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य। 4. कानपुर (कल्याणपुर)- सांसद भ्राता श्याम बिहारी मिश्रा को ईश्वरीय सौगात देती हुए ब्र.कु. उमा बहन एवं ब्र.कु. नीलम बहन। 5. पठानकोट- ऑल इण्डिया वूमैन कान्फ्रैंस पठानकोट की अध्यक्षा बहन आशा, ब्र.कु. सत्या बहन को शॉल ओढाकर सम्मानित करते हुए। 6. लखनऊ- 'मेडिटेशन एण्ड मेडिकेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए (बायें से दायें) ब्र.कु. राधा बहन, डॉ. उषा किरण बहन तथा समाज कल्याण आयुक्त भ्राता आर. रामानी जी। 7. बीकानेर (सार्दुलगंज)- संभागीय आयुक्त भ्राता मधुकर गुप्ता जी, अखिल भारतीय स्वर्णिम ग्राम अभियान की शुरूआत के अवसर पर आयोजित समारोह में बोलते हुए। साथ में हैं ब्र.कु. सुमन बहन, ब्र.कु. कमल बहन, भ्राता भँवर लाल जी कोठारी, ब्र.कु. शान्ता बहन एवं ब्र.कु. मोहिनी बहन। 8. देहली (कश्मीरी गेट)- ऑटोमोबाइल पार्ट्स मर्चेन्टस् एसोसिएशन के अध्यक्ष भ्राता शंकर लाल अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मीरा बहन।

1. आबू पर्वत- महाराष्ट्र के सामाजिक न्यायमंत्री भ्राता डीगम्बर राव बागल जी ग्लोबल हॉस्पिटल का अवलोकन करने के पश्चात् ब्र.कु. डॉ. प्रताप भाई जी से ज्ञान-चर्चा करते हुए। **2. सादड़ी-** विश्व शान्ति दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उप-जिलाधीश भ्राता राजेन्द्र कविया जी, रानी सुशीला कुमारी जी तथा अन्य। ब्र.कु. शुचिता बहन सम्बोधित करते हुए। **3. जोधपुर-** डॉ. जे.के. माथुर, सह मुख्य चिकित्सा अधिकारी तथा लॉयन किशन सिंह देवड़ा को ईश्वरीय साहित्य का अवलोकन कराती हुई ब्र.कु. शील बहन। **4. देहली (अशोक विहार)-** *विश्व शान्ति दिवस समारोह में विचार व्यक्त करते हुए विधायक भ्राता मांगेराम गर्ग।* मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. राज बहन, डॉ. मंजू गुप्ता तथा अन्य। **5. रिकांगपियो (किन्नौर)-** विधायक भ्राता जगतसिंह नेगी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सुषमा बहन। **6. भीलवाड़ा-** शान्ति सद्भावना ग्राम अभियान के यात्रियों को शिवध्वज प्रदान करते हुए विधायक भ्राता सुभाष बहेड़िया जी। ब्र.कु. नारायण भाई साथ में हैं। **7. शामली-** विश्व शान्ति एवं योग तपस्या दिवस पर सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. राज बहन। मंच पर विराजमान हैं सी.ओ. भ्राता राहुल मिठास जी एवं इण्डियन मेडिकल एसोसियेशन के अध्यक्ष डॉ. भ्राता अरविन्द तायल जी। **8. मोगा-** जेल अधीक्षक भ्राता दलजीत सिंह भट्टी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. संजीवन बहन।

1. अमृतसर (अजनाला)- शिव मन्दिर के प्रधान भ्राता रूपलाल जी, शोभा यात्रा को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए। साथ में ब्र.कु. राज बहन जी, आदर्श बहन जी, डॉ. पोपली जी तथा अन्य भाई-बहनें। **2. होशियारपुर**- वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भ्राता लोकनाथ आंगरा जी को ब्र.कु. राजकुमारी बहन ईश्वरीय साहित्य भेंट करती हुई। **3. अनूपगढ़ (राजस्थान)**- नव निर्वाचित विधायक भ्राता अशोक नागपाल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सुषमा बहन। **4. राजसमंद**- खादी ग्रामोद्योग के जिलाकेन्द्र की महाप्रबन्धक बहन अरुणा शर्मा जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पूनम बहन। साथ में सहायक निदेशक भ्राता कैलाशचन्द्र जलानी जी खड़े हैं। **5. बांदा**- खादी एवं ग्रामोद्योग संस्थान (लखनऊ) के निदेशक भ्राता सी.एन. शुक्ला जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. गीता बहन। **6. बदलापुर**- ज्ञान-चर्चा के पश्चात् ग्रुप फोटो में व्यापार मण्डल अध्यक्ष भ्राता बिज्जु सिंह, ब्र.कु. राधिका बहन तथा अन्य भाई-बहनें। **7. नानौता**- अखिल भारतीय स्वर्णिम ग्राम अभियान के समापन समारोह में मंच पर विराजमान हैं (बायें से) चीनी मिल उपाध्यक्ष भ्राता चौ. कँवर सिंह, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. सरला बहन, उ. प्र. के परिवहन राज्यमंत्री भ्राता राजेन्द्र सिंह राणा, ब्र.कु. भारतभूषण भाई, ब्लॉक प्रमुख भ्राता कृष्ण कुमार पुण्डीर तथा ब्र.कु. राज बहन। **8. गोरखपुर**- जिला कारागार में बंदियों द्वारा रक्तदान के अवसर पर उपस्थित हैं (बायें से) जिला जज भ्राता जगत प्रकाश, ब्र.कु. पुष्पा बहन, जेल अधीक्षक जी, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा अन्य। **9. धर्मपुर (हि.प्र.)**- कुम्हार हट्टी में नव-निर्मित भवन के उद्घाटन समारोह पर विचार व्यक्त करते हुए डिप्टी कमांडर भ्राता एन.आर. मुकुन्द। साथ में विराजमान हैं ब्र.कु. विमला बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. बिन्दु बहन तथा अन्य।
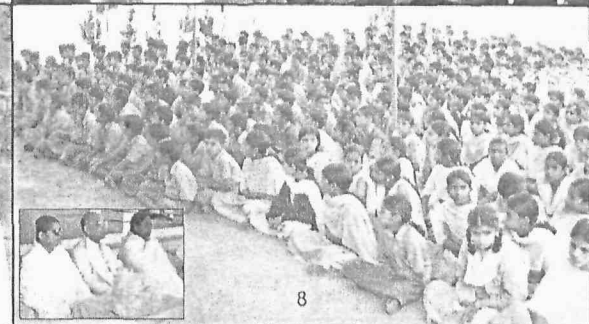
1. देहली (मजलिस पार्क)- दिल्ली नगर निगम स्थायी समिति के अध्यक्ष भ्राता मुकेश कुमार गोयल, ब्र.कु. राजकुमारी बहन और ब्र.कु. अमृता बहन जी का स्वागत करते हुए। **2. नागौर**- नव निर्वाचित विधायक भ्राता गजेन्द्रसिंह जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. अनीता बहन। **3. सितारगंज (बरेली)**- तहसीलदार भ्राता धर्मसत्तू को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रभा बहन। **4. कुसमरा (वेवर)**- ब्रह्माकुमारी पाठशाला का उद्घाटन करते हुए नगराध्यक्ष भ्राता रामादेव गुप्ता। साथ में हैं ब्र.कु. राधा बहन तथा ब्र.कु. मीनाक्षी बहन। **5. भीमाना (शान्तिवन)**- शिवध्वजारोहण करते हुए भ्राता कालूराम जी, ब्र.कु. छगन भाई, ब्र.कु. बिमला बहन, ब्र.कु. भरत भाई, ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा ब्र.कु. मोहन भाई। **6. खड़ात (शान्तिवन)**- शिवध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु. भरत भाई, ब्र.कु. उर्मिला बहन, जमींदार जयन्ती भाई, रावालाल पुरोहित तथा अन्य। **7. छापरी (शान्तिवन)**- शिवध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं सरपंच बहन लीलाजी, ब्र.कु. सत्यनारायण भाई, ब्र.कु. भरत भाई, ब्र.कु. रत्ना बहन तथा अन्य। **8. भारजा (शान्तिवन)**- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सूर्य भाई।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन-307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : shantivan@bkedu.net (Ph. No. (02974)- 228125, 228126 gyanamrit@vsnl.com
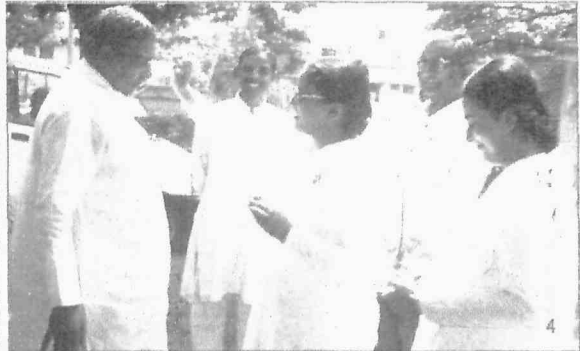
1. सिरगिटि (बिलासपुर)- छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण राज्यमंत्री डॉ. भ्राता कृष्णमूर्ति बंधी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. गीता बहन। **2. फर्रुखाबाद (अढतियान स्ट्रीट)**- गंगा के तट पर चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उ.प्र. के पर्यटन मंत्री भ्राता नरेश अग्रवाल जी। साथ में हैं ब्र.कु. सरोज बहन, ब्र.कु. मन्जू बहन तथा अन्य। **3. शाहगंज**- उत्तर प्रदेश के समाज कल्याण राज्यमंत्री भ्राता शैलेन्द्र कुमार यादव को ईश्वरीय साहित्य प्रदान करती हुई ब्र.कु. राधिका बहन। **4. जमशेदपुर**- झारखण्ड के भू-राजस्व मंत्री भ्राता मधु सिंह जी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई ब्र.कु. अंजू बहन। साथ में हैं ब्र.कु. वन्दना बहन। **5. अहमदनगर**- भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान बहन ममता माबेन को खेल-प्रभाग की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी बहन। **6. इन्दौर (ओम शान्ति भवन)**- विश्व सद्भावना आध्यात्मिक समारोह का उद्घाटन करते हुए (दाएँ से) महात्मा गाँधी मेडीकल कॉलेज के डीन डॉ. भ्राता वी.के. सैनी, स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर के महाप्रबंधक भ्राता आर.डी. यादव, ऑस्ट्रेलिया से पधारी बहन गेहले आथार्टन, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, 'निरोगधाम' के प्रधान सम्पादक डॉ. भ्राता प्रेमदत्त पाण्डेय, आकाशवाणी के निदेशक भ्राता एच.के. कोटिया, भ्राता बी.एन. बोस एवं ब्रह्माकुमारी निर्मला बहन। **7. मुम्बई**- होलिस्टिक हेल्थस वर्ल्ड काँग्रेस में मानवता की उच्चतम सेवा के लिए, डॉ. रमेश (ग्लोबल हॉस्पिटल) को, डॉ. वेलेंटिना, रशियन फेडरेशन द्वारा दो स्पेशल अवॉर्डस् तथा डॉ. मेहेर मास्टर मूस अध्यक्ष वर्ल्ड काँग्रेस मुम्बई द्वारा मेडल से सम्मानित किया गया। **8. मुम्बई**- होलिस्टिक हेल्थस वर्ल्ड काँग्रेस में मानवता की उच्चतम सेवा के लिए डॉ. शोभना (ग्लोबल हॉस्पिटल) को डॅम डॉ. वेलेंटिना, रशियन फेडरेशन द्वारा दो स्पेशल अवॉर्डस तथा डॅम डॉ. मेहेर मास्टर मूस, अध्यक्ष वर्ल्ड काँग्रेस मुम्बई द्वारा मेडल से सम्मानित किया गया।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd.No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 5-7th of the month

जम्मू- काँग्रेस अध्यक्षा बहन सोनिया गाँधी जी, ब्र.कु. सुदर्शन बहन को सद्भावना के सिपाही अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए।

धार- मध्यप्रदेश की मुख्यमंत्री बहन उमा भारती को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सत्या बहन। साथ में हैं विधायिका बहन रन्जना बघेल तथा अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)- पारलाखमण्डी के महाराजा गोपीनाथ गजपति जी को ईश्वरीय सन्देश देती हुई राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी।

पटना- 'विश्व शान्ति दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए (दायें से) भ्राता संजय पासवान, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री, भ्राता एस.एन.पी.सिन्हा, पूर्व कुलपति पटना वि.वि., ब्र.कु. दादी निर्मलपुष्पा, भ्राता आर.के. महतो, पूर्व कुलपति पटना वि.वि., भ्राता आर.आर. प्रसाद, पूर्व डी.जी.पी. (बिहार), भ्राता बलवीर भसीन तथा ब्र.कु. संगीता बहन।